सम्राट अशोक के

गिरनार शिलालेख

अशोक तपासे

पुरिस-दम्म प्रकाशन

सम्राट अशोक के

गिरनार शिलालेख

अशोक तपासे

अशोक अष्टमी (चैत्र शुद्ध अष्टमी)

२९ मार्च, इ.स. २०२३

पुरिस-दम्म प्रकाशन

© हर्षदा तपासे

इस पुस्तक के किसी भी भाग का किसी भी तरह से (इलेक्ट्रॉनिक अथवा अन्य माध्यम से) लेखक की अनुमति बिना नकल करना निषिद्ध है।

संपर्क : 9969112113

9930112113

8879112113

जिन्होंने मेरी सम्राट अशोक के प्रति श्रद्धा को करीब से देखा,
और मुझे सम्राट अशोक के शिलालेखों के विषय में लिखने को
हमेशा ही प्रेरित किया,
मेरे उन सभी स्नेही जनों को यह पुस्तक समर्पित करता हुँ।

- अशोक तपासे

सन्नती स्थित स्तुप के उत्खनन से प्राप्त हुवा
सम्राट अशोक का पत्थर मे खुदा हुवा भित्तिचित्र ।
इस पर ब्राम्हि लिपी मे **राया असोको** लिखा हुवा है। (बाण से दर्शाया हुवा)

पांगुरारिया शिलालेख मूल ब्राम्हि लेख और देवनागरी लिप्यांतर

(लघु-शिलालेख के कुछ उपर स्थित शिलालेख)

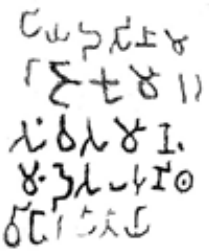

पियदसि नाम
राजकुमार व
संवसमाने*
(इ)मं देस पपुनिथ*
विहारयाताये

हिन्दी अनुवाद

प्रियदर्शी नामक राजकुमार संगिनी (मंगेतर) के साथ यहाँ पर विहार हेतु पहुँचा था।

यह शिलालेख मध्यप्रदेश के भोपाल से दक्षिण-पूर्व मे करिब ६० कि.मी. पर और होशिंगाबाद शहर से नजदिक सलकनपुर नामक गाँवकी छोटी पहाडीयों के समीप नक्तीतलाई इस एक छोटेसे गाँव के पास मिले हुवे सम्राट अशोक के (पांगुरारीया) लघु-शिलालेख के उपरी शिला के उपर करीब ढाई मीटर उंचाईपर पाच पंक्ति मे केवल आठ शब्दोंका यह लेख विशेष है। इसके अक्षर आकार मे बडे लेकीन कुछ बेडौल है। इससे लगता है की यह लेख सम्राट अशोक के लेखनीक ने नही लिखा होगा, परंतु यहाँपर रहने वाले किसी दुसरे व्यक्ति ने लिखा होगा ऐसे महसुस होता है। लेख के आशय से इसी बातको पुष्टी मिलती है। इस शिलालेख के माध्यम से सम्राट अशोक युवराज होते समयसे ही अपनी सहेली (विदिशा देवी), जो स्वयं बौद्ध परंपरा मानती थी, इसके साथ बौद्ध भिक्षु संघ के सानिध्य मे आते थे तथा उनके बौद्ध तत्वज्ञान के प्रति रुचि थी ऐसा लगता है।

पालि भाषा के शब्दार्थ

*संवसति = संगत करता है। *पापुणति = पहुँचता है।

सम्राट अशोक के पत्थरों से जूडा हुवा मेरा स्नेह सफर ...

गुरूवार, ९ मार्च २०२३ के दिन मैने सम्राट अशोक का गिरनार शिलालेख दूसरी बार देखा। इस शिलालेख को पहली बार शनीवार, १२ नवंबर २०११ को देखा था। इसके कुछ समय बाद इसके संरक्षक इमारत की छत लेख शिलापर गिर गयी थी। मन में आशंका घीर आयी। कहीं इस शिला को क्षती न पहुँची हो। तभी से इसे दुबारा देखने की बेहद इच्छा हो रही थी। लेकीन कहीं कोई संयोग नही जुट रहा था। ग्यारह वर्ष ऐसे ही बीत गये। इन ग्यारह वर्षों मे बहूत कुछ बदल गया।

जब पहली बार गिरनार आया था तो सम्राट अशोक के शिलालेख यह विषय मेरे लिये बहूत नया नया था। इसके पहले केवल मास्कि और नित्तुर लघु-शिलालेख शनीवार ८ अक्तुबर २०११ को देखे थे। यह दो शिलालेख सबसे पहले देखनेका एक कारण मन में संजोया हुवा था। इन शिलालेखों में हमारे सम्राट का नाम असोक लिखा हुवा है।

गिरनार शिलालेख पहली बार देखने के बाद अन्य जगहों पर मिले शिलालेख देखने की इच्छा प्रबल होती रही। सम्राट का नाम लिखा हुवा भारत में उत्तर की ओर मध्य-प्रदेश के गुजर्रा स्थित लघु-शिलालेख देखा। सारनाथ में लघु स्तंभ लेख देखा। सांचि में और एक लघु स्तंभ लेख देखा। अब विशाल स्तंभ लेख देखने की इच्छा पनपने लगी। राजधानी दिल्ली में दो स्तंभ है। मिरत स्तंभ और टोपरा स्तंभ। मिरत स्तंभ बड़ा हिंदूराव अस्पताल के सामने चौराहे के पास और टोपरा स्तंभ फिरोजशा कोटला में। दोनो स्तंभ देखने के साथ साथ उसी दौर में कालसी शिलालेख देखने की योजना थी। फिरोजशा कोटला स्तंभ मन को बहुत भा गया। क्यों की इस पर खुदाई किये अक्षर बहुत स्पष्ट दिखते थे। इस पर सातवाँ शिलालेख भी है जो अन्य किसी स्तंभ पर नहीं है।

स्तंभ देखने के दूसरे दिन सुबह को कालसी की ओर चल पडे। अनजान रास्ता था, मेरे लिये भी और जो गाडी मैने भाडेसे ली थी उसके चालक के लिये भी। साथ में हर्षदा तो थी ही, क्यों की हर्षदा को साथ लिये बिना मैने कोई सफर नहीं किया है। खराब रास्ता और लंबा सफर, हम दोनो ही अपने आप में सिमट गये थे। सात घंटे से अधिक समय के बाद कालसी पहुँचे तो हमारा आनंद परमोच्च था।

कालसी शिलालेख देखने के बाद पूरे परिवार के साथ धौलि शिलालेख देखने की योजना सफल हुई। धौलि देखने के दूसरे दिन मैं और हर्षदा जौगड देखने निकल पडे।

इसके बाद फिर एक बार दक्षिण भारत के सफर की योजना बनाई। मास्कि-नित्तूर दुबारा देखे। गविमठ, ब्रम्हगीरी, सिद्धपूर, रजूला मंदागीरी, येरागुडी यह शिलालेख देखे। जतिंग रामेश्वर और पालकीगुंडू स्थल दूर से देखने पडें क्योंकी हम दोनो की ही पहाड़ चढ़ने की क्षमता नहीं थी।

कुछ ही दिनों में दक्षिण भारत की और एक सफर की योजना बनाई गयी। अब हमारे साथ हमारे एक बंधू और हर्षदा की बहन थी। दक्षिण के सभी शिलालेख दूसरी बार देखे। मास्कि और नित्तुर तीसरी बार देखे।

इस सफर को समाप्त करने के बाद, तूरंत ही रूपनाथ सफर की योजना पहलेसे नियोजित थी। रुपनाथ के मनोहारी स्थान का सफर बहुत ही संस्मरणीय रहा।

हमारे दो परम स्नेही, हमारे सफर के हर बार के साथियों के साथ एक लंबे सफर की योजना बनाई गयी। उत्तर भारत के सम्राट अशोक के स्तंभ और तथागत बुद्ध के जीवन से जुडे पवित्र स्थल देखने की योजना। लुंबिनी, तथागत की जन्मस्थली और सम्राट अशोक का स्तंभ, कुसिनारा (कुशी नगर), लौरिया नंदनगढ़ स्तंभ, रामपूरवा में जमीन पर लेटे हुवे दो स्तंभ, लौरिया अरेराज स्तंभ, बोध गया, वैशाली स्तुप और स्तंभ, बाराबार गुफा और उनके द्वार पर लिखे लेख यह सब कुछ देखना कूल दो सप्ताह के सफर में सफल हुवा। साथ में केसरिया स्तुप, श्रावस्ति का जेतवन, तथागत के पिता का घर कपिलवस्तु और राजगीर यह सभी क्षेत्र देखे गये।

दिल्ली में स्थित दोनो स्तंभ, कालसी का शिलालेख दूसरी बार हमारे परम स्नेही साथीयों के साथ दूबारा देखे।

फिर एक बिलकूल नये सफर की योजना चारों ने मिलकर बनाई। सबसे नया आविष्कार रतनपूर्वा शिलालेख उसके करीब अहरौरा शिलालेख, दूसरी बार सारनाथ स्तुप और अशोक स्तंभ, लुंबिनी स्तंभ और निगलीवा स्तंभ देखा। इस तरह सम्राट अशोक के भारत और नेपाल में स्थित सभी शिलालेख और स्तंभ लेख देखने की इच्छा पूर्ण हुई थी। और यह गिरनार शिलालेख का दूसरा सफर ....

शायद, सम्राट अशोक के पत्थरों से जूडा हुवा मेरा स्नेह सफर ... सफर अभी जारी है, और कभी खत्म नहीं होगा।

प्राचीन भारतीय लिपी

ब्राम्हि वर्णमाला

अ	आ	इ	ई	उ
ऊ	ए	ऐ	ओ	औ
क	ख	ग	घ	ङ
च	छ	ज	झ	ञ
ट	ठ	ड	ढ	ण
त	थ	द	ध	न
प	फ	ब	भ	म
य	र	ल	व	श
ष	स	ह	ळ	अं

अ आ इ ई उ ऊ ए ऐ ओ औ

सर अलेक्झँडर कनिंगहॅम ने उनके पुस्तक में लिखी हुई अक्षर उत्पत्ति

	अशोक इ.स.पू. २५०	मुद्रा इ.स.पू. ४००	चित्ररुप - उत्पत्ति श्रोत शब्द
क			कन्तन - काटना - कट्यार
ख			खनन - खोदना
ग			गगन - आकाश गुफा - गुहा
च			चम्मच
छ			छत्र - छत्री - छाता
ज			जंघा - जाँघ
ट			टोकरा - टोकरी
त			ताडपत्र
ध			धनु - धनुष्य
न			नासिका - नाक
प			पाणि - हाथ - हथेली
ब			बंधन, बांधना, बंदिस्त
म			मत्स्य-मछली मुख- मुंह
य			योनी यव - जौ, यवरस
र			रश्मि - किरण
ल			लारका - हंसिया
व			वीणा - वीणा
श			श्रवण - सुनना
स			सर्प - साँप
ह			हंसिया

न पुप्फगन्धो पटिवातमेति न चन्दनं तगरमल्लिका वा ।
सतञ्च गन्धो पटिवातमेति सब्बा दिसा सप्पुरिसो पवाति ॥११॥

- **तथागत बुद्ध**
- **पुप्फवग्ग, धम्मपद.**

हिन्दी अनुवाद

चन्दन अथवा, तगर-चमेली फुलों की गन्ध
हवा के विरोधी नहीं होती (हवा के विरूद्ध दिशा में नहीं बहती)।
(लेकिन) जागृत सुजनों की गंध हवा-विरोधी होती है,
(तभी यह) सभी दिशाओं में बहती है। (११)

सम्राट अशोक के बृहद् शिलालेख

सम्राट अशोक के शिलालेखों की बात होती है तो सर्व प्रथम बृहद शिलालेख आँखों के सामने आते है। क्यों की यह शिलालेख विस्तृत रुप से सम्राट अशोक की मानसिकता को संपूर्ण रुप से दर्शाते है।

सम्राट अशोक ने भारतीय उपखंड मे विशाल शिलाप्रस्तरोंपर लिखे आठ शिलालेख आज तक ज्ञात है। यह आठ शिलालेख गिरनार, कालसि, येरागुडी, शाहबाजगढी, मानसेहरा, धौली और जौगडा इन स्थानोंपर स्थित है। इन सभी शिलालेखों मे क्रमवार एकरुपता देखी गयी है। फिर भी इन शिलालेखों का अभ्यास करने के लिये प्रायः गिरनार शिलालेख ही चुने जाते है। इस बात का कारण यह है की यह शिलालेख आज भी पूर्णतः स्पष्ट दिखाई देते है। कमी बस इस बातकी है की इन में पाँचवा और तेरहवा लेख शिला के टूट जानेसे अपूर्ण है। अन्य शिलालेखों में अध्ययन के लिये कुछ अधिक कमीयाँ देखी जाती है।
कालसी शिला लेख अक्षत है लेकिन इसकी पंक्तियाँ इतनी लंबी है की पढ़ने में कुछ दिक्कत होती है।

धौलि और जौगडा मे १ से १० और १४ ऐसे सिर्फ ग्यारह शिलालेख है।

शाहबाजगढ़ और मानसेहरा स्थित शिलालेख दायें से बायें लिखी जानेवाली खारोष्टी लिपीमे लिखे है, तथा यह स्थान आज पाकिस्तान मे है।

मुंबई के करीब सोपारा इस जगह पर भी दो शिलालेख लिखे शिलाखंड विपन्न अवस्था मे मिले है। यह दोनो शिलालेख चौदह शिलालेख शृंखला के आठवे तथा नौवे शिलालेख के अनुरुप है। आज यह मुंबई के पुराण वस्तु संग्रहालय मे रखे हुवे है।

इस बृहद् शिलालेख शृंखला के अवतरण की संपूर्ण जानकारी हो इसलिये यहाँ निम्नानुसार मूल शिलालेख और उसके हिन्दी अनुवाद प्रस्तुत किये है।

गिरनार शिलालेख १ ते १४

(सभी चौदह मूल शिलालेख और इसके हिन्दी अनुवाद)

कालसी शिलालेख १३

(मूल शिलालेख (शहाबाजगढी केवल - प्राकृत स्वरुप) और हिन्दी अनुवाद)

गिरनार शिलालेख - १

मूल ब्राम्हि शिलालेख

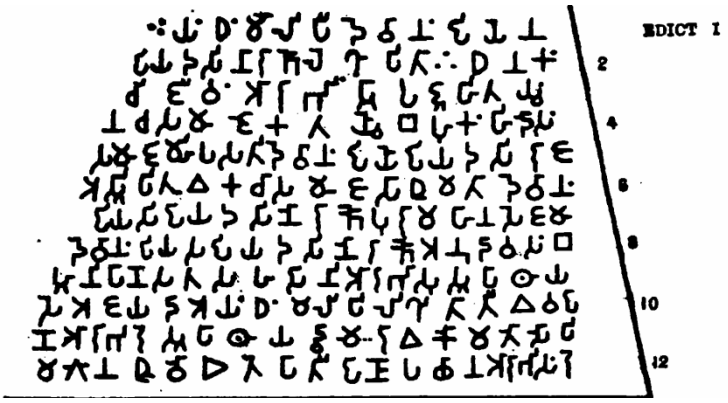

अक्षरानुक्रम से देवनागरी लिप्यांतर

इयंधंमलिपीदेवानंप्रियेन
प्रियदसिनाराञोलेखापिताइधंनकं
चिजीवंआराभित्पाप्रजूहितव्यं
नचसमाजेकतव्योबहुकंहिदोसं
समाजम्हिपसतिदेवानंप्रियोप्रियदसिराजा
अस्तिपितुएकचासमाजासाधुमतेदेवानं
प्रियसिप्रियदसिनोराञोपुरामहानसेजमा
देवानंप्रियसप्रियदसिनोराञोअनुदिवसंब
हुनिपाणसतसहसानिआराभिसुसूपाथाय
सेअजयदाअयंधंमलिपिलिखितातीएवप्रा
णआराभरेसूपाथायद्वेमोराएकोमगोसोपि
मगोनधूवोएतेपातीप्राणापछानआराभिसंरे

प्राकृत भाषा मे सार्थ वाक्य

इयं धंमलिपी देवानंप्रियेन प्रियदसिना राञो लेखापिता.
इधं न कंचि जीवं आराभित्पा *प्रजूहितव्यं. न च समाजे कतव्यो.
बहुकं हि दोसं समाजम्हि पसति देवानंप्रियो प्रियदसि राजा.
अस्ति पि तु एकचा समाजा साधुमते देवानंप्रियसे प्रियदसिनो राञो.
पुरा महानसेजमा देवानंप्रियस प्रियदसिनो राञो अनुदिवसं बहुनि पाण सतसहसानि आराभिसु सूपाथाय.
से अज यदा अयं धंमलिपि लिखिता ती एव प्राण आराभरे सूपाथाय ,
द्वे मोरा एको मगो , सो पि मगो न धूवो.
एते पि ती प्राणा पछा न आराभिसंरे.

हिन्दी अनुवाद

यह नीतीलेख देवानंप्रिय प्रियदर्शी राजाने लिखवाया। यहाँ जनहित के लिये (यज्ञ-आहुती के लिये) किसी भी जीव की हत्या न करे। समाजोत्सव भी (भौतिक-सुखोत्सव) ना (करें)। देवानंप्रिय प्रियदर्शी राजाको ऐसे उत्सवों मे अनेक दोष दिखते है। फिर भी कुछ उत्सव देवानंप्रिय प्रियदर्शी राजा को अच्छे लगते है। देवानंप्रिय प्रियदर्शी राजा की पाकशाला मे हर दिन अनेक सौ-हजार प्राणी पक्वान्न के लिये मारे जाते है। पर अब यह नीतीलेख लिखते समय पक्वान्न के लिये केवल तीन प्राणी मारे जाते है, दो मोर और एक हिरन। और हिरन भी हमेशा नही। आगे से यह तीन प्राणी भी नही मारे जाएंगे।

* प्रजूहितव्यं यही शब्द शिलोलेखों मे दिखता है, इसलिये इसका अर्थ **जनहित के लिये** ऐसा ही होना चाहिये। पिजुहितव्यं का मतलब **यज्ञ-आहुती के लिये** ऐसे नही।

गिरनार शिलालेख- २

मूल ब्राम्हि शिलालेख

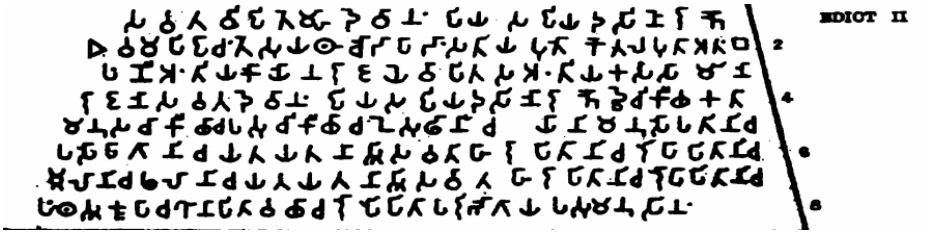

अक्षरानुक्रम से देवनागरी लिप्यांतर

सवतविजितेम्हादेवानंप्रियसप्रियदसिनोराञो
एवमपिप्राचंतेसुयथाचोडपाडंसतियपुतोकेतलपुतेअतंब
पणीअंतियकोयोनराजयेवापितसअंतियकससामिनो
राजानोसवतदेवानंप्रियसप्रियदसिनोराञोद्वेचिकीछकता
मनुसचाकीछाचपसुचिकीछाचओसुढानीचयानिमनुसोपगानिच
पसोपागानिचयतयतनास्तिसवताहरापितानिचरोपापितानिच
मूलानीचफलानिचयतयतनास्तिसवातहारापितानिचरोपापितानिच
पंथेसूकूपाचखानापितावछाचरोपिपितापरिभोगायपसुमनुसानं

प्राकृत भाषा के सार्थ वाक्य

सवत विजितेम्हा देवानंप्रियस प्रियदसिनो राञो एवमपि प्राचंतेसु यथा चोड पाडं सतियपुतो केतलपुते अ तंबपणी अंतियको योनराज ये वा पि तस अंतियकस सामिनो राजानो सवत देवानंप्रियस प्रियदसिनो राञो द्वे चिकीछ कता मनुसचाकीछाच पसुचिकीछाच. ओसुढानी च यानि मनुसोपगानिच पसोपागानिच यत यत नास्ति सवता हरापितानि च रोपापितानिच. मूलानी च फलानि च यत यत नास्ति सवात हारापितानि च रोपापितानि च. पंथेसू कूपा च खानापिता वछा च रोपिपिता परिभोगाय पसुमनुसानं.

हिन्दी अनुवाद

देवानंप्रिय प्रियदर्शी राजा के राज्य मे सर्वत्र और सीमावर्ती (राज्यों मे) जैसे चोड, पांड्य, सत्यपुत्र, केरलपुत्र तथा ताम्रपर्णी, यवनराजा अंतियोक और अंतियोक के और आगे राज्यों मे सर्वत्र देवानंप्रिय प्रियदर्शी राजा ने दो चिकित्सां (की सुविधा) की है, मनुष्यचिकित्सा और पशुचिकित्सा। मनुष्योपयोगी और पशु-उपयोगी औषधी जहाँ नहीं (वहाँ) सर्वत्र, (अन्य जगहों से) लाकर लगवाई है। कंदमूल और फल जहाँ जहाँ नही (वहाँ) सर्वत्र लाकर लगवाये है। राहगीरों के लिये (रास्तों के किनारे पर) कुएँ खुदवाएँ है, वृक्ष लगवाएँ है, पशूओं के और मनुष्यों के भलाई तथा उपयोग के लिये।

गिरनार शिलालेख- ३

मूल ब्राम्हि शिलालेख

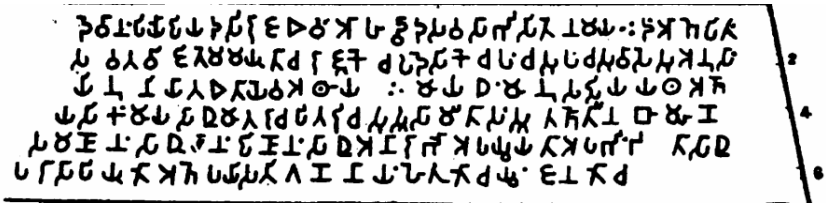

अक्षरानुक्रम से देवनागरी लिप्यांतर

देवानंपियोप्रियदसिराजाएवंआहद्वादसवसाभिसेतेनमयइदंआज्ञापितं
सवतविजितेममयुताचराजूकेचपदेसिकेचपंचसुपंचसुवासेसुअनुसां
यानुनियातएतायेवअथायइमायधंमानुसस्टिययथअज्ञा
यसिकंमायसाधुमातराचपितरिचसुस्रुसामितासंस्ततज्ञोतीनबाम्हण
समणानंसाधुदानंप्राणानंसाधुअनाराभोअपव्ययताअपभांडतासाधु
परासापियुतोअज्ञपयिसतिगणनायंहेतुतोचव्यंजनतोच

प्राकृत भाषा के सार्थ वाक्य

देवानंपियो प्रियदसि राजा एवं आह. द्वादस वसाभिसेतेन मय इदं आञापितं. सवत विजिते मम युता च राजूके च पदेसिके च पंचसु पंचसु वासेसु अनुसायानु नियात एतायेव अथाय इमाय धंमानुसस्टिय यथ अञाय पि कंमाय. साधु मातरि च पितरि च सुस्रुसा मिता संस्तुत ञातीन बाम्हण समणानं साधु दानं प्राणानं साधु अनाराभो अपव्ययता अपभांडता साधु. परिसा पि युतो अञपयिसति गणनायं हेतुतो च व्यंजनतो च.

हिन्दी अनुवाद

देवानंप्रिय प्रियदर्शी राजा ने ऐसे कहा। अभिषेक के पश्चात बारा वर्षोंबाद मै यह आज्ञा करता हुँ। मरे राज्य मे सर्वत्र युक्त, रज्जुक और प्रादेशिक ऐसे (धम्म-शासक) है, वे हर पाँच पाँच वर्षों मे नियमित (अपने अपने क्षेत्र मे) धम्मशासन के लिये जाएँ तथा ऐसे अन्य कारोबार करें। माता-पिता की सेवा करना उत्तम। मित्र, आप्त, (अपनी) जाती के, ब्राम्हण व श्रमण इन्हे दान देना उत्तम। जीवहिंसा न करना उत्तम। अल्पव्यय व अल्पसंचय करना उत्तम। परिषद की ओर से ऐसी और अन्य आज्ञा संक्षेप मे तथा विस्तार मे युक्तों को दी जायेगी।

गिरनार शिलालेख– ४

मूल ब्राम्हि शिलालेख

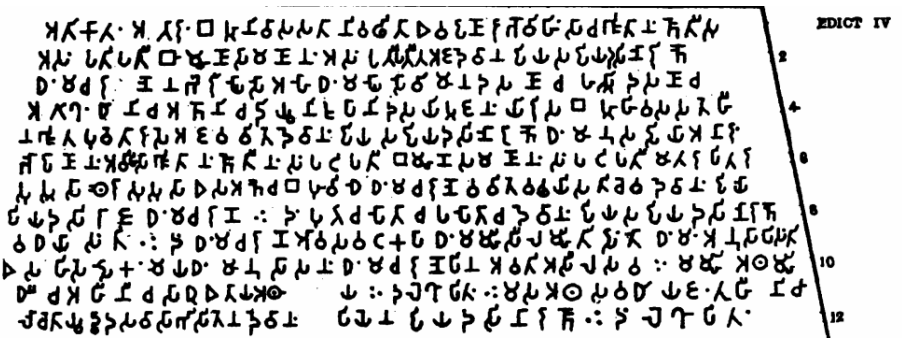

अक्षरानुक्रम से देवनागरी लिप्यांतर

अतिकातंअतारंबहूनिवाससतानिवढिताएवप्राणारभोविहिंसाचभूतानंञातीसु
असंप्रतिपतीबाम्हणासामणानंअसंपतीपतीतअजदेवानप्रियसप्रियदसिनोराञो
धंमचरणेनभेरीघोसोअहोधंमघोसोवीमानदसणाचहस्तिदसणाच
अगिखंधानिचअञानिचदिव्यनिरूपानिदसयित्पजनंयारिसबहूहिवससतेही
नभूतपुवेतारासेअजववितेदेवानंप्रियसप्रियदसिनोराञोधंमानुसस्टियाअनारं
भोप्राणानंअविहिसाभूतानंञातीनंसंपटिपतीबम्हणसमणानंसंपटिपतीमातरपितर
सुसूसाथैरसुसुसाएसअञेचबहुविधेधंमचरणेववितेवढयिसतिचेवदेवानंप्रियो
प्रियदसिराजाधंमचरणइदंपुताचपोताचपपोताचदेवानंप्रियसप्रियदसिनोराञो
वधयासंतिइदंधंमचरणआवसवटकपाधंमम्हिसीलम्हितिस्टंतोधंमंअनुसापिसंति
एसहिसेस्टेकंमेयधंमानुसासनंधंमचरणेपिनअवतिअसीलसवइमम्हिअथम्हि
धीचअहिनीचसाधुएतायअथायइदंलेखपितंइमसअथसवधियजंतुहीनिचा
लोचेतव्याद्वादसवासाभिसितेनदेवानंपियेनप्रियदसिनाराञाइदंलेखापितं

प्राकृत भाषा के सार्थ वाक्य

अतिकातं अतारं बहूनि वाससतानि वढिता एव प्राणारभो विहिंसा च भूतानं ञातीसु असंप्रतिपती बाम्हणासामणानं असंपतीपती. त अज देवानप्रियस प्रियदसिनो राञो धंमचरणेन भेरीघोसो अहो धंमघोसो वीमानदसणा च हस्तिदसणाच अगिखंधानि च अञानि च दिव्यनि रूपानि दसयित्प जनं. यारिस बहूहि वससतेही न भूतपुवे तारिसे अज वढिते देवानंप्रियस प्रियदसिनो राञो धंमानुसस्टिया अनारंभो प्राणानं अविहिसा भूतानं ञातीनं संपटिपती बम्हणसमणानं संपटिपती मातर पितर सुसूसा थैरसुसुसा. एस अञे च बहुविधे धंमचरणे वढिते. वढयिसति चेव देवानंप्रियो प्रियदसि राजा धंमचरण इदं. पुता च पोता च पपोता च देवानंप्रियस प्रियदसिनो राञो प्रवधयिसंति इदं धंमचरणं आव सवटकपा धंमम्हि सीलम्हि तिस्टंतो धंमं अनुसापिसंति. एस हि सेस्टे कंमे य धंमानुसासनं. धंमचरणे पि न अवति असीलस. व इमम्हि अथम्हि वधी च अहिनी च साधु. एताय अथाय इदं लेखपितं इमस अथस वधि यजंतु हीनि चा लोचेतव्या. द्वादसवासाभिसितेन देवानंपियेन प्रियदसिना राञा इदं लेखापितं.

हिन्दी अनुवाद

अनेक (या), सौ वर्षों का समय बीत गया, प्राणियों का वध – जीव हिंसा, जातीयों प्रति तथा ब्राम्हण-श्रमणों के प्रति अनादर बढ रहा है। आज प्रजाजनों को विमान दिखाकर, हाथी दिखाकर, अग्निशिखा दिखाकर और ऐसेही अन्य भव्य-दिव्य दृष्य दिखाकर देवांनाप्रिय प्रियदर्शी राजा के धम्माचरण (के नाद) से ढोल-नाद भी धम्म-नाद हो रहा है। जैसे अनेक शत-वर्षों मे कभी न हुवा ऐसे, देवांनाप्रिय प्रियदर्शी राजा के धम्मानुशासन से, प्राणियों के अ-वध, जीव अहिंसा, जातीयों के प्रति सद्-भाव, ब्राम्हण-श्रमणों के प्रति आदर, माता-पिता की सेवा, बडों की सेवा ऐसा सद्-भाव बढ रहा है। ऐसे ही अनेक प्रकार से धम्माचरण बढ रहा है। ऐसे ही देवांनाप्रिय प्रियदर्शी राजा का धम्माचरण बढते रहेगा। देवांनाप्रिय प्रियदर्शी राजा के पुत्र, पौत्र, प्रपौत्र सृष्टी के अंत तक ऐसे ही धम्माचरण वृद्धी को प्रेरणा देते रहेंगे और धम्म से और शील से प्रतिष्ठित होकर धम्मानुशासन करेंगे। क्योंकी यह धम्मानुशासन ही श्रेष्ठ कर्म है। शीलहीन से धम्माचरण नही होता है। इसलिये इस (धम्मानुशासन धम्माचरण के) कार्य का उत्कर्ष होना, अपकर्ष न होना उत्तम। आप इस उत्कर्ष मे और अपकर्ष-रोध मे मगन रहो इसलिये यह लिखवाया है। अभिषेक पश्चात बारह वर्षोंबाद देवांनाप्रिय प्रियदर्शी राजा ने यह लिखवाया है।

गिरनार शिलालेख– ५ मूल ब्राम्हि शिलालेख

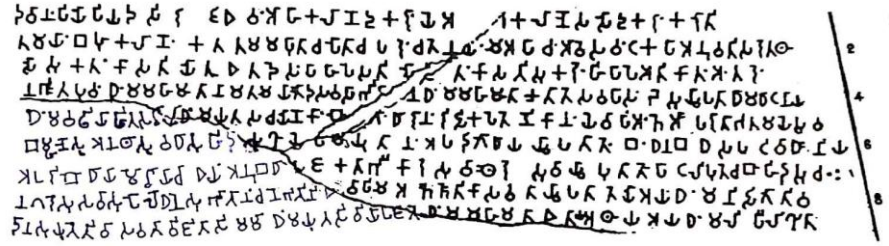

अक्षरानुक्र से देवनागरी लिप्यांतर

देवानंपियोपियदसिराजाएवंआहाकलाणदुकरंयेअ...कलाणेससोदुकरंकरोति
तमयांबहुकलाणंकततममपुताचपोताचपरंचतेनइमेअपाचंआवसवंटकपाअनुवतिसरतथा
सोसुकतंकासतियोतुएतदेसंपाहापेसतिसो...तंकासतिसुकरंहिपापेअतिकातंअंतरं
नभूतपुवंधंममहामातानामतमेयातौदसवसाभि...नधंममहामाताकुतातेसवपासंडेसुव्यपताधाम धाटनाय
धंमवढीयाहितसुखाये.धमयतसचयोणकंबो....गंधारानंरिट्सकपेतेणकानंयेवापिअञआपारता भतमयेसुव
बम्हणेसु अनथेसु वधेसु हिद.सुखाये...युतानंअपदेगोधायव्यपतेतंबंधनबंधसपटिबाधानिय
अपरिबोधायेमोखायेचाएयंअनुबधाप.जाकताभीकारेसुवाथैरसुवाव्यापुतातोपाटलिपुताचबाहिदे सुचइ
नगरेसुसवेसुपोलोधनेसुभातानंचनेभतिनियएवापिमे.वापिमेअञेजातिकासवताव्यपतातेयोअयं धंमनिस्टितोतिव
दानसुयुतेतिवासवताविजितसिममाधंमयुतसिवियापटाते.धंममहामताएतायअथायअयधंमलिपी लिखिता

टिप्पणी :- इस शिलालेखका बहुतसा हिस्सा शिला के टुटनेसे नष्ट हुवा है। फिर भी उपलब्ध अक्षरों को अन्यत्र उपलब्ध समान लेखों से जोडकर तुलनात्मक रित से मैने इसका पुनर्लेखन किया है। इस शिलालेख का अर्थ प्राप्त करनेका प्रयास अनेक जेष्ठ अभ्यासकों ने भी किया है। गिरनार शिलालेख के साथ मेल रखने वाले १४ शिलालेखों की शृंखला कालसि, येरागुडी, शाहबाजगढ़, मानसेहरा, धौलि और जौगडा यहाँ पर है।

प्राकृत भाषा के सार्थ वाक्य

देवानंपियो पियदसि राजा एवं आहा. कलाण दुकरं ये अ(दिकरो) कलाणेस सो दुकरं करोति. त मयां बहु कलाणं कत. त मम पुता च पोता च परं च तेन इ मे अपाचं आव सवंटकपा अनुवतिसर तथा सो सुकतं कासति. यो तु एत देसं पि हापेसति सो दुकतं कासति. सुकरं हि पापे. अतिकातं अंतरं न भूतपुवं धंममहामता नाम. त मया तौदसवसाभि(सिते)न धंममहामता कुता. ते सवपासंडेसु व्यपता धंमधिटानाय. (धंमवढिया हिदसुखाये) धमयुतस च योणकंबोजगंधारानं रिट्सिकपेतेणकानं ये वा पि अञ आपारता. भतमयेसु व (बम्हणेसु अनथेसु वधेसु हिद)सुखाये (धंम)युतानं अपदेगोधाय व्यपते तं बंधनबंधस पटिबाधानिय (अपरिबोधाये मोखाये चा एयं अनुबधा प)जा कताभीकारेसु वा थैरसु वा व्यापुता गो पाटलिपुता च बाहिदेसु च. इ (नगरेसु सवेसु पोलोधनेसु भातानं च ने भतिनिय ए वा पि मे) अञे जातिका सवता व्यपता ते. यो अयं धंमनिट्सितो ति व (दानसुयुते ति वा सवता विजितसि ममा धंमयुतसि वियापटा ते) धंममहामता. एताय अथाय अयं धंमलिपी लिखिता.

टिप्पणी :- इस शिलालेख का बडा हिस्सा शिलाके टुटनेसे नष्ट हुवा है। मैने इसका पुनर्लेखन **कालसी** शिलालेख के सहारे किया है। फिर इस शिलालेख का हिन्दी अनुवाद अगले पन्नोंपर दे रहे है।

हिन्दी अनुवाद

देवानंप्रिय प्रियदर्शी राजा (ऐसे) कहता है। कल्याण(कारी) (कार्य करना) दूष्कर (कठिन)। जो कल्याणकारी (कार्य) पहले करता है वह दूष्कर (कार्य) करता है। मैने अनेक कल्याणकारी काम किये है। मेरे पुत्र, पोते और आगे उनकी संताने ऐसे (मेरा) अनुकरण करेंगे। वे सुकृत्य करेंगे और जो इसकी (इस कार्य की) जरासी भी उपेक्षा करेंगे वे दूष्कृत्य करेंगे। पाप (दूष्कृत्य) आसान होता है। काफि अरसा बीता, जिसके पूर्व धर्ममहामात्र नामके (अधिकारी) नही थे। अभिषेक के तेरह वर्ष बाद मैने धर्ममहामात्र (नामित) किये है। वे सभी संप्रदायों मे जे धर्मयुक्त है, उनके हित-सुख के लिये, और यवन, कंबोज, गांधार, राठिक, पेटेनिक, अपरांत (और उससे भी पार) धर्म-अधिष्ठान के लिये तथा धर्मवृद्धी के लिये नियुक्त किये है। कष्टकरी, ब्राम्हण, धनीक, अनाथ, वृद्ध इनके हित-सुख के लिये, धर्म-पारायणता के लिये, तथा उनकी बाधा-निवारण के लिये वह (धर्ममहामात्र नामित) है। बंधन-बंधितों के (कैदीयों के) पालन-पोषण के लिये, बाधा-निवारण के लिये तथा जिनकी संतती है, जो विपत्तिग्रस्त या वृद्ध है, उनकी मुक्तता के लिये यह (धर्ममहामात्र नामित) है। यहाँ पाटलीपुत्र मे और बाहेर के सभी नगरों मे, बंधू, भगीनी तथा अन्य रिश्तेदार इन सभी के अंतःपूर मे (घरो-घरों मे) वह (धर्ममहामात्र नामित) है। मेरे राज्य मे सर्वत्र धर्म-पारायण लोगों मे, धर्म-श्रद्धावान और दानशूर लोगों मे धर्ममहामात्र नामित है। (यह चिरस्थायी हो और मेरे प्रजा जन इसका अनुसरण करे) इसलिये यह नीती-लेख लिखवाया है।

टीप्पणी – यह अनुवाद तीनो लेखों का एक साथ तुलनात्मक स्वरुप किया है। रठीक और पेटेनिक यह उल्लेख गिरनार और कालसी लेख मे है।

गिरनार शिलालेख चट्टान पर सभी शिलालेखों की संरचना

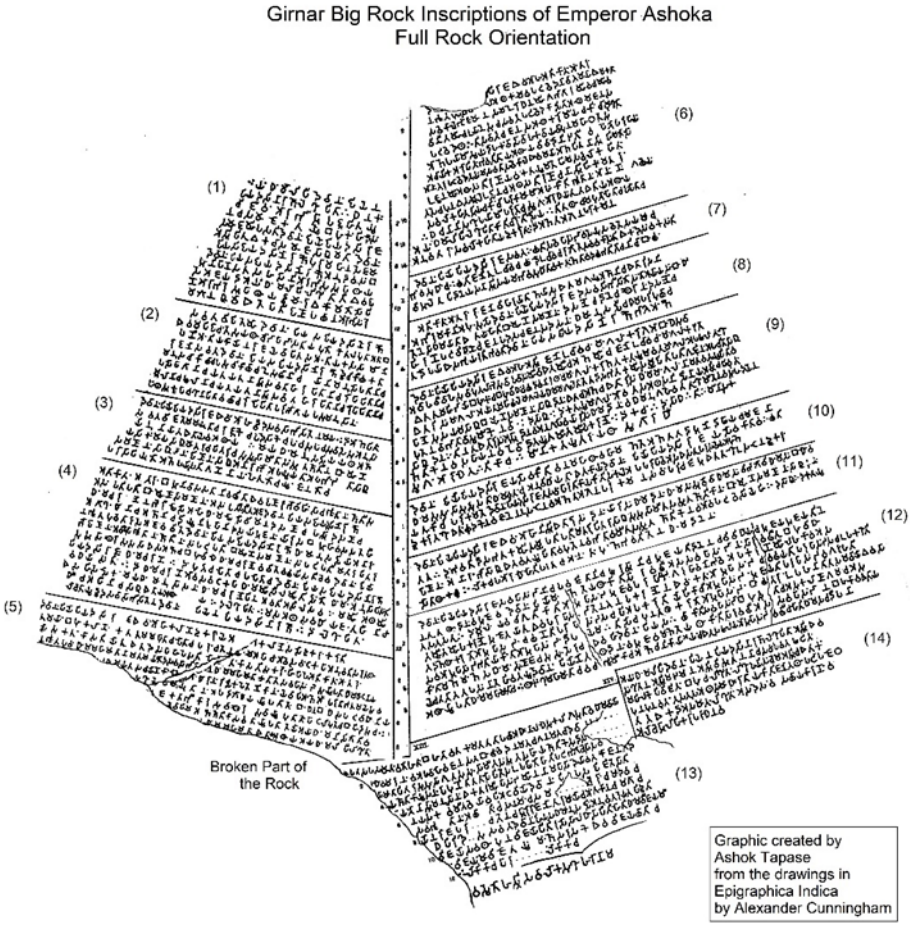

गिरनार शिलालेख– ६

मूल ब्राम्हि शिलालेख

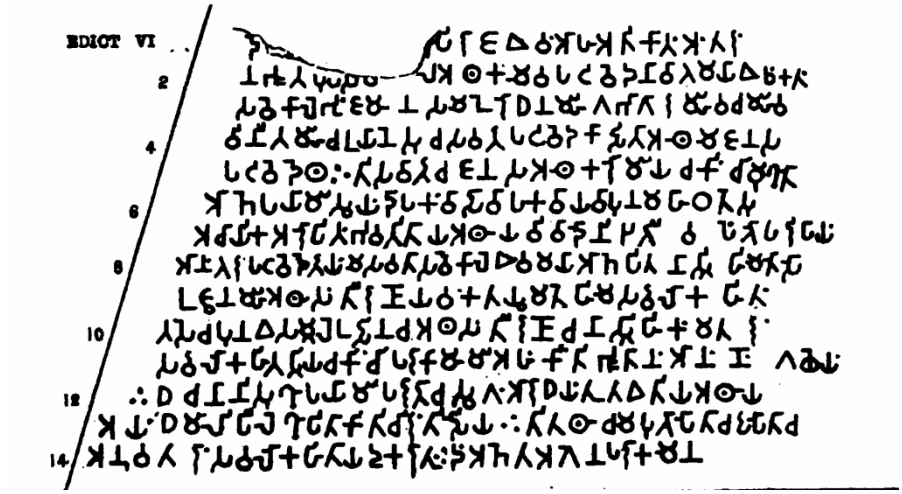

अक्षरानुक्रम से देवनागरी लिप्यांतर

दे.....सिराजाएवंआहअतिकातंअंतरं
नभूतपुवसव...लअथकंमेवपटिवेदनावातमयाएवंकतं
सवेकालेभुजमानसमेओरोधनम्हिगभागारम्हिवचम्हिव
विनीतम्हिचउयानेसुचसवतपटिवेदकास्टिताअथेमेजनस
पटिवेदेथइतिसवेत्रचजनसअथेकरोमियचकिंचिमुखतो
आञपयेमिस्वयंदापकंवास्रावापकवायवापुनमहाठत्रेसु
अचायिकअरोपितंभवतितायअथायविवादोनिझतीवपेंतोपरिपायं
आनंतरंपटवेदेत्रयंमेसवतासवेकालेएवमयाआञपितनास्तिहिमेतोसो
उज्वनम्हिअथसंतिरणायवकंतव्यमतेहिमेसर्वलोकहितं
तसेचपुनएसमुलेउस्टानचअथसंतीरणाचनास्तिहिकंमतरं
सर्वलोकहितत्पायचकिंचिपराकामामीअहंकिंतिभुतानंआनंणंगछेयं
इधचनानिसुखापयामिपरात्राचस्वगंआराधयंतुतएतियअथाय
अयंधंमलिपीलेखापिताकितिचिरंतिस्टियइतितथाचमेपुतापोताचप्रपोताच
अनुवतरंसवलोकहितायदुकरतुइदंअञतअगेनपराकमेन

प्राकृत भाषा के सार्थ वाक्य

देवानंपियो पियदसि राजा एवं आह. अतिकातं अंतरं न भूतपुव सव...ल अथकंमे व पटिवेदना वा. त मया एवं कतं. सवे काले भुजमानस मे ओरोधनम्हि गभागारम्हि वचम्हि व विनीतम्हि च उयानेसु च सवत पटिवेदका स्टिता अथे मे जनस पटिवेदेथ इति. सवेत्र च जनस अथे करोमि. य च किंचि मुखतो आञपयेमि स्वयं दापकं वा स्रावापकं वा य वा पुन महाठत्रेसु अचायिक अरोपितं भवति ताय अथाय विवादो निझती व पेंतो परिपायं आनंतरं पटवेदेत्रयं मे सवता सवे काले. एव मया आञपित. नास्ति हि मे तोसो उज्वनम्हि अथसंतिरणाय व कंतव्यमते हि मे सर्वलोकहितं. तसे च पुन एस मुले उस्टान च अथसंतीरणा च. नास्ति हि कंमतरं सर्वलोकहितत्पा. य च किंचि पराकामामी अहं किंति भुतानं आनंणं गछेयं इध च नानि सुखापयामि परात्रा च स्वगं आराधयंतु त. एतिय अथाय अयं धंमलिपी लेखापिता किति चिरं तिस्टिय इति तथा च मे पुता पोता च प्रपोता च अनुवतरं सवलोकहिताय. दुकर तु इदं अञत अगेन पराकमेन.

हिन्दी अनुवाद

देवानंप्रिय प्रियदर्शी राजा कहते है। काफि अरसा हुवा (समय बीत गया), इसके पूर्व राज्य मे आवश्यक कार्य न होते थे, और (कार्य की) जानकारी भी नही मिलती थी, इस लिये मैने ऐसे किया है (ऐसी व्यवस्था की है) सारे समय, भोजन समय, अंतःपुर मे, शयनकक्ष मे, पशु-शाला मे, घुड सवारी के समय अथवा उद्यान मे, सभी जगहों पर (किसीभी स्थल-काल) वृत्तदाता स्थिर होकर (शांत होकर, बिना जल्दबाजी से) मुझे प्रजा-जन का वृत्त कहे (कह सकता है)। (मै) सर्वत्र जनता का काम करता हुँ। और (मै) जो भी मौखिक आज्ञा देता हुँ, दान संबंधी अथवा (मेरी) घोषणा संबंधी अथवा महामात्रों पर सौंपे गये काम संबंधी, अगर कोई विवाद उत्पन्न होता है या फिर कोई परिचर्चा होने लगे तो, इसकी सुचना मुझे त्वरित सर्वत्र सर्व-समय दी जाय। मै यह आज्ञा करता हुँ। (कितने ही) परिश्रम से अथवा कार्यपूर्ती से मुझे (संपूर्ण) समाधान नही मिलता। सभी लोगों का हित यही मेरा कर्तव्य है। और इसका आधार है परिश्रम और कार्यपूर्ती। सभी लोकहितों से बढकर कुछ भी बडा नही। मै जो कुछ भी प्रयास करता हुँ वह, सभी प्राणिमात्रों से ऋणमुक्त हो जाऊं, उन्हे यहाँ सुख दे दुँ और आगे (भी) स्वर्ग-प्राप्ति करा दुँ, इस कारण। यह नीती-लेख चिरस्थायी हो जाय और मेरे पुत्र, पौत्र तथा प्रपौत्र लोकहित के लिये इसका (मेरे कार्य का) अनुसरण करे, इसलिये लिखवा रहा हुँ। प्रयास के सिवा यह कठीन है।

गिरनार शिलालेख– ७

मूल ब्राम्हि शिलालेख

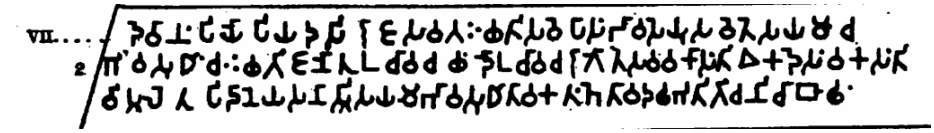

अक्षरानुक्रम से देवनागरी लिप्यांतर

देवानंपियोपियदसिराजासवतइछतीसवेपासंडावसेयुसवेतेसयमंच
भावसुधिंचइछतिजनोतुउचावचछंदोउचावचरागोतेसववकासंतिएकदेसंवकसंति
विपुलेतुपिदानेयसनास्तिसयमेभावसुधितावकतंञतिताचदढभतिताचनिचाबाढं

प्राकृत भाषा के सार्थ वाक्य

देवानंपियो पियदसि राजा सवत इछती सवे पासंडा वसेयु. सवे ते सयमं च भावसुधिं च इछति. जनो तु उचावचछंदो उचावचरागो. ते सव व कासंति एकदेसं व कसंति. विपुले तु पि दाने यस नास्ति सयमे भावसुधिता व कतंञता च दढभतिता च निचा बाढं.

हिन्दी अनुवाद

देवानंप्रिय प्रियदर्शी राजा की इच्छा है की सर्व संप्रदाय सर्वत्र रहें। वे सभी (संप्रदाय) संयम और चित्तशुद्धी की इच्छा रखते है। (परंतु) लोगों को नानाविध इच्छा और नानाविध आसक्ति होती है। (इस लिये) वे (अपने अपने कर्तव्य) पूर्णतः करते है या अंशतः करते है। विपुलता मे दान देने वाला भी, संयम, चित्तशुद्धी, कृतज्ञता तथा दृढ-भक्ति न होने पर तर निश्चितही निकृष्ट (होगा)।

गिरनार शिलालेख– ८

मूल ब्राम्हि शिलालेख

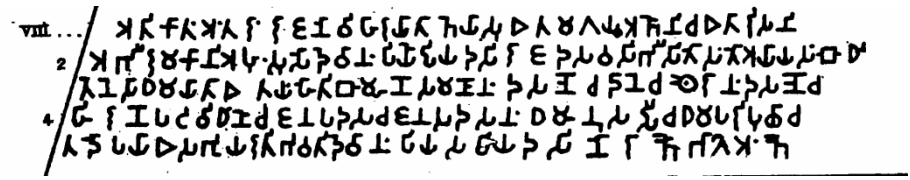

अक्षरानुक्रम से देवनागरी लिप्यांतर

अतिकातंअतरंराजानोविहारयाताञयासुएतमगव्यअञानिचएतारिसनि
अभीरमकानिअहुंसुसोदेवानंपियोप्रियदसिराजादसवसाभिसितोसंतोअयायसंबोधि
तेनेसाधंमयाताएतयंहोतिबाम्हणसमणानंदसणेचदानेचथैरानंदसणेच
हिरणपटिविधानोचजनपदसचजनसदसनंधमानुसस्टीचधमपरिपुछाच
तदोपयाएसभुयरतिभवतिदेवानंपियसपियदसिनोराञोभागेअञे

प्राकृत भाषा के सार्थ वाक्य

अतिकातं अतरं राजानो विहारयातां ञयासु. एत मगव्या अञानि च एतारिसनि अभीरमकानि अहुंसु. सो देवानंपियो प्रियदसि राजा दसवसाभिसितो संतो अयाय संबोधि. तेनेसा धंमयाता. एतयं होति बाम्हण समणानं दसणे च दाने च थैरानं दसणे च हिरणपटिविधानो च जनपदस च जनस दसनं धमानुसस्टी च धमपरिपुछा च तदोपया. एस भुय रति भवति देवानंपियस पियदसिनो राञो भागे अञे.

हिन्दी अनुवाद

काफि अरसा हुवा (जब) राजे विहार-यात्रा को जाते थे। इसमे शिकार तथा अन्य ऐसेही प्रकार की मौज-मजा की जाती थी। (मगर) देवानंप्रिय प्रियदर्शी राजा अभिषेक के दस वर्ष बाद संबोधि (बोध-गया) गये, इसलिये यह धंमयात्रा। इसमे होते है ब्राम्हण-श्रमणों के दर्शन तथा (उन्हे) दान, बडों के दर्शन और (उनकी) सुवर्ण से परिव्यवस्था (धन से पोषण व्यवस्था), गावों-गावों के प्रजाजनों का दर्शन, धम्म का ज्ञान और उसके अनुरुप धम्म परिचर्चा। यह नित्य हो रहा है। देवानंप्रिय प्रियदर्शी राजा के उत्तर अवधिमे ऐसे होता रहेगा।

गिरनार शिलालेख– ९

मूल ब्राम्हि शिलालेख

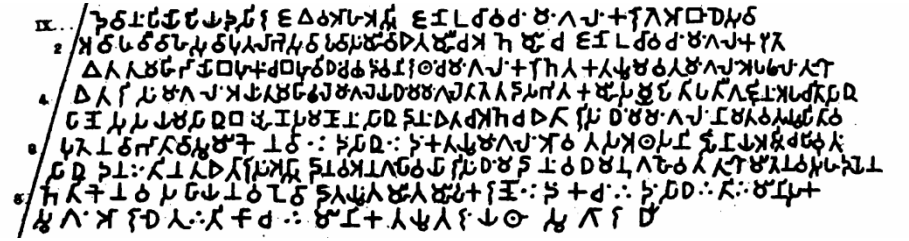

अक्षरानुक्रम से देवनागरी लिप्यांतर

देवानंप्रियोप्रियदसिराजाएवंआहअस्तिजनोउचावचंमंगलंकरोतेआबाधेसुवा
अवाहवीवाहेसुवापुतलाभेसुवाप्रवासम्हिवाएतम्हिचअञम्हिचजनोउचावचंमंगलंकरोते
एततुमहिडायोबहुकंचबहुविधंचछदंवनिरथंचमंगलंकरोञतकतव्यमेवतुमंगलंअपफलंतुखो
एतरिसंमंगलंअयंतुमहाफलेमंगलेयधंममंगलेततेतदासभतकम्हिसम्यप्रतिपतीगुजुनंअपचितिसाधु
पाणेसुसयमसाधुबम्हणसमणानंसाधुदानंएतचअञचएतारिसंधंममंगलंनामतवतव्यपिताव
पुतेनवाभातावास्वमिकेनवाइदंसाधुइदंकतव्यमंगलंआवतसअथसनीनिस्टानायअस्तिचपिवुतं
साधुदनइतिनतुएतारिसंअस्तादानवअनगहोवयारिसंधंमदानंवधमनुगहोवततुखामितेनवसुहदयेन
ञातिकेनवसहायनवओदितव्यंतम्हितम्हिप्रकरणेइदंकचंइदंसाधइतिइमिनिसक

स्वगंआराधेतुइतिकाचइमिनिकतव्यतरंयथास्वगारधी

प्राकृत भाषा के सार्थ वाक्ये

देवानंप्रियो प्रियदसिराजा एवं आह. अस्ति जनो उचावचं मंगलं करोते आबाधेसु वा अवाहवीवाहेसु वा पुतलाभेसु वा प्रवासम्हि वा एतम्हि च अञम्हि च जनो उचावचं मंगलं करोते. एत तु महिडायो बहुकं च बहुविधं च छुदं च निरथं च मंगलं करोञ त कतव्यमेव तु मंगलं. अपफलं तु खो एतरिसं मंगलं. अयं तु महाफले मंगले य धंममंगले. ततेत दासभतकम्हि सम्यप्रतिपती गुजुनं अपचिति साधु पाणेसु सयमो साधु बम्हणसमणानं साधु दानं एत च अञ च एतारिसं धंममंगलं नाम त वतव्यं पिता व पुतेन वा भाता वा स्वमिकेन वा इदं साधु इदं कतव्य मंगलं आव तस अथस निस्टानाय. अस्ति च पि वुतं साधु दन इति. न तु एतारिसं अस्ता दानं व अनगहो व यारिसं धंमदानं व धमनुगहो व त तु खो मितेन व सुहदयेन वा ञातिकेन व सहायन व ओदितव्यं तम्हि तम्हि प्रकरणे इदं कचं इदं साध इति इमिनि सक स्वगं आराधेतु इति का च इमिनि कतव्यतरं यथा स्वगारधी.

हिन्दी अनुवाद

देवानंप्रिय प्रियदर्शी राजा यह कहता है। अनेक लोग छोटे-बडे व्रत-वैकल्य (मंगलाचार) करते है। रोगनिवारण के लिये, लडका-लडकी के विवाह के लिये, पुत्रप्राप्ति के लिये, (सफल) यात्रा के लिये, ऐसे अनेक अन्य कारणों के लिये, लोग छोटे-बडे व्रत-वैकल्य (मंगलाचार) करते है। इसमे अधिकतर महिलाएँ अनेक प्रकार के क्षुद्र व निरर्थक व्रत-वैकल्य (मंगलाचार) करती है। फिर भी व्रत-वैकल्य (मंगलाचार) तो करने ही है। इस प्रकार के वैकल्य अल्प-फलदायी होते है। अधिक फलदायी वैकल्य (मंगलाचार) होते है नीती-वैकल्य (धम्म-मंगलाचार)। इस मे अंतर्भूत है नौकर-चाकरों से यथा-योग्य व्यवहार, बडों का-गुरु का उत्तम आदर, प्राणियों से उत्तम संयम, ब्राम्हण-श्रमणों को उत्तम दान और इस तरह के अन्य (सदाचार), इन्ही को कहते है नीती-वैकल्य (धम्म-मंगल)। इसलिये पिता-पुत्र, बंधु, स्वामि इन सभी को कहे कि, यह उत्तम है, यही मंगलाचार करतें रहे, तब-तक की जब-तक सिद्धता न मिले। ऐसा भी कहा है की, दान देना उत्तम। ऐसा (कोई भी) दान अथवा अनुग्रह (भक्ति) नही जैसे की धम्मदान अथवा धम्म-भक्ति। इस लिये मित्र, सुहृदयी, रिश्तेदार, सहकारी, इन्हे दृढता से ये कहे कि, हर कोई समय यही करते रहे, यही उत्तम है, इसी से स्वर्ग प्राप्ति होगी। इससे बढ़कर क्या कर सकते है जिससे स्वर्ग प्राप्ति होगी।

(सुत्तपिटक–खुद्दकनिकाय–खुद्दकपाठ-महामंगलसुत्त मे तथागत यही उपदेश करते है।)

गिरनार शिलालेख– १०

मूल ब्राम्हि शिलालेख

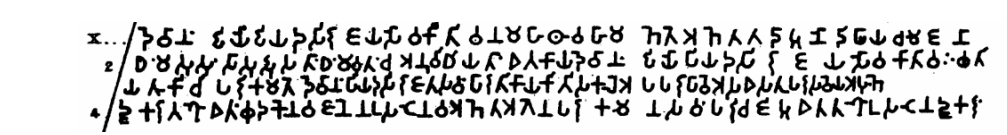

अक्षरानुक्रम से देवनागरी लिप्यांतर

देवानंप्रियप्रियदसिराजायसोवकीतिवनमहाथवहामञतेअञततदात्पनोदिघायचमेजना
धंमसुसुंसासुस्रुसतांधंमवुतंचअनुविधियतांएतकायदेवानंप्रियोपियदसिराजायसोवकितिवइछति
यतुकिचिपरिकमतेदेवानंपियदसिराजातसवंपारतिकायकितिसकलेअपपरापावेअसएसतुपरसवे
यअपुञ
दुकरातखोएतंछुदकेनवजानेनउसटेनवअञतअगेनपराकमेनसवंपरिजित्पाएततखोउसटेनदूकरं

प्राकृत भाषा के सार्थ वाक्ये

देवानंप्रिय प्रियदसि राजा यसो व कीति व न महाथवहा मञते अञत तदात्पनो दिघाय च मे जनो धंमसुसुंसा सुस्रुसतां धंमवुतं च अनुविधियतां. एतकाय देवानंप्रियो पियदसि राजा यसो व किति व इछति. यं तु किचि परिकमते देवानं पियदसि राजा त सवं पारतिकाय किति सकले अपपरिस्त्रवे अस. एस तु परसवे य अपुञ. दुकरं त खो एतं छुदकेन व जनेन उसटेन व अञत अगेन पराकमेन सवं परिजित्पा. ए त खो उसटेन दूकरं.

हिन्दी अनुवाद

देवानंप्रिय प्रियदर्शी राजा यश तथा किर्ती को महत्वपूर्ण नही मानते बल्कि वो चाहते है की अब के समय और दीर्घकाल तक मेरी प्रजा (धंम) नीती सुनने मे उत्सुक रहे और (धंम) नीती आचरण करती रहे। इसके लिये देवानंप्रिय प्रियदर्शी राजा यश व किर्ती की इच्छा करते है। देवानंप्रिय प्रियदर्शी राजा जो प्रयास करते है वह सभी (प्रजाजन) (भव)पार जावे, और सभी (लोग) दूष्कर्म-मुक्त हो जाय इस लिये। अपुण्य यही है परिस्त्रव। किसी भी छोटे और बडे मानव के लिये उत्तम प्रयास अथवा सर्वत्याग बिना यह कठिन है। बडे व्यक्ति के लिये तो अधिक कठिन।

गिरनार शिलालेख– ११

मूल ब्राम्हि शिलालेख

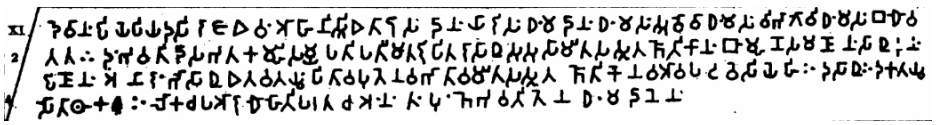

अक्षरानुक्रम से देवनागरी लिप्यांतर

देवानंप्रियपियदसिराजाएवंआहानास्तिएतारिसंदानंयारिसंधमसंस्तवोवाधंमसंविभागोधं
मसंबधोव
ततइदंभवतिदासभतकम्हिसम्यपतिपतीमातारिपितरासाधुसुसुसामितसस्तुतञातिकानं
बाम्हणसमणानंसाधुदानं
प्राणानंअनारंभोसाधुएतवतव्यंपितावपुतेनवभातावमितसस्तुतञातिकेनवआवपटिवेसि
येहिइदसाधुइदकतव्य

सोताथाक..इलोकचपआरधोहोतिपरतचअंनंतंपुंञभवतितेनधंमदानेनं

प्राकृत भाषा के सार्थ वाक्य

देवानंप्रिय पियदसि राजा एवं आहा. नास्ति एतारिसं दानं यारिसं धमसंस्तवो वा धंमसंविभागो धंमसंबधो व. तत इदं भवति दासभतकम्हि सम्यपतिपती मातारि पितरा साधु सुसुसा मितसस्तुतञातिकानं बाम्हण समणानं साधु दानं प्राणानं अनारंभो साधु. एत वतव्यं पिता व पुतेन व भाता व मितसस्तुतञातिकेन व आव पटिवेसियेहि इद साधु इद कतव्यं. सो तथा करु इलोकचस आरधो होति परत च अंनंतं पुंञ भवति तेन धंमदानेनं.

हिन्दी अनुवाद

देवांनाप्रिय प्रियदर्शी राजा ऐसे कहते है। धम्म का परिचय, धम्म का प्रसार, धम्म से अनुबंध इससे (उत्तम) प्राप्ति कोई नही। इसमे अंतर्भूत है, नौकर-चाकरों से यथा-योग्य व्यवहार, माता-पिता की सेवा उत्तम, मित्र-परिचित-जातीबांधव व ब्राम्हण-श्रमण इनको दान उत्तम, प्राणियों के अ-वध (भाव) उत्तम। पिता, पुत्र, भाई, मित्र, परिचित, जातीबांधव तथा निकट रहनेवाले सभी को कहे की "यही उत्तम है, यही करना है", यह करने से इहलोक मे सिद्धी प्राप्त होती है, इस नीती-दान से (धम्मदान से) परलोक मे असीम पुण्य मिलता है।

गिरनार शिलालेख– १२

मूल ब्राम्हि शिलालेख

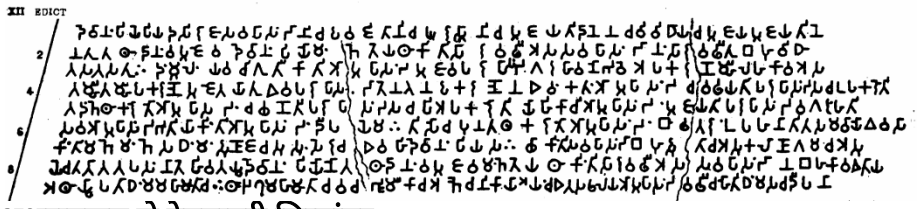

अक्षरानुक्रम से देवनागरी लिप्यांतर

देवानंपियेपियदसिराजासवपासंडानिचप्रवजितानिचघरस्तानिचपूजयतिदानेनचविविधा
यचपूजायपूजयतिने
नतुतथादानंवपूजावदेवानंपियोमंञतेयथाकितिसारवढीअससवपासंडानंसारावढीतुबहु
विधा
तसतसतुइदंमूलंयवचिगुतीकितिआत्पपासंडपूजावपरापासंडगरहावनोभवेअपकरणम्हि
लहकावअस
तम्हितम्हिप्रकरणेपूजेतयातुएवपरापासंडातेनतेनप्रकरणेनएवंकतंआत्पपासंडचवढयति
परपासंडसचउपकारोति
तदंयथाकरोतोआत्पपासडंचछणतीपरापासंडचपिअपकरोतियाहिकाचिआत्पपासंडंपूज
यतिपरपासंडवगरहति
सवआत्पपासंडभतियाकिंतिआत्पपासंडंदीपयेमइतिसोचपुनतथकरातोआत्पपासंडंबाढ
तरंउपहनातितसमवायोएवसा
किंतिमञमंञसधंमंस्रुणाजचसुसंसेरचएवहिदेवानंपियसइछाकिंतिसवपासंडाबहुस्रुताच
असुकलाणागमंचअसु
येचतत्रततपसंनातेहिवतव्यदेवानंपियोनोतथादानंवपुजावमंञतेयथाकिंतिसारवढीअसस
वपासंडानबहकावएताय
अथाव्यापताधंममहामताचइथीझखमहामाताचवचभूमीकाचअञेचनिकायाअयंचएतस
फलंयआत्पपासंडवढीचहोतिधंमसचदीपना

प्राकृत भाषा के सार्थ वाक्य

देवानंपिये पियदसि राजा सवपासंडानि च प्रवजितानि च घरस्तानि च पूजयति दानेन च विविधाय च पूजाय पूजयति ने. न तु तथा दानं व पूजा व देवानंपियो मंञते यथा किति सारवढी अस सवपासंडानं. सारावढी तु बहुविधा. तस तस तु इदं मूलं य वचिगुती किति आत्पपासंडपूजा व परापासंडगरहा व नो भवे अपकरणम्हि लहका व अस तम्हि तम्हि प्रकरणे. पूजेतया तु एव परापासंडा तेन तेन प्रकरणेन. एवं कतं आत्पपासंड च वढयति परपासंडस च उपकारोति. तदं यथा करोतो आत्पपासडं च छणती परापासंड च पि अपकरोति याहि कोचि आत्पपासंडं पूजयति परपासंड व गरहति सव आत्पपासंडभतिया किंति आत्पपासंडं दीपयेम इति सो च पुन तथ करातो आत्पपासंडं बाढतरं उपहनाति. त समवायो एव साधु किंति मञमंञस धंमं स्रुणाज च सुसंसेर च. एव हि देवानंपियस इछा किंति सव पासंडा बहुस्रुता च असु कलाणागमा च असु. ये च तत्र तत पसंना तेहि वतव्यं. देवानंपियो नो तथा दानं व पुजा व मंञते यथा किंति सारवढी अस सवपासंडान. बहका च एताय अथा व्यापता धंममहामता च इथीझखमहामाता च वचभूमीका च अञे च निकाया. अयं च एतास फलं य आत्पपासंडवढी च होति धंमस च दीपना.

हिन्दी अनुवाद

देवांनाप्रिय प्रियदर्शी राजा दान से और विविध पुजनों से सभी संप्रदाय के प्रवज्जित (गृहत्यागी) और (सद्)गृहस्थों का सम्मान करते है। परंतु देवांनाप्रिय किर्ती तथा सारवृद्धी को (जैसे) मानते है (वैसे) दान व पुजन को नही। सारवृद्धी अनेक प्रकार से होती है। इसमे मुख्य (होती है) अल्पवाणी (बातें करनेपर संयम)। (मतलब) क्या ? तो विनाकारण स्वसंप्रदाय की पुजा और परसंप्रदाय की निन्दा न करें या अल्पसी (चर्चा) यों त्यों प्रकरण मे होती रहे। समय समय पर परसंप्रदाय की ही पुजा करे। एसा करने वाला वस्तुतः स्वसंप्रदाय की वृद्धी तथा परसंप्रदाय को उपकृत करता है। इससे विपरित करने वाला स्वसंप्रदाय की क्षति और परसंप्रदाय (को भी) अपकार करता है। जो कोई स्वसंप्रदाय के भक्तिस्तव स्वसंप्रदाय को (अधिक) प्रकाशित करने के लिये स्वसंप्रदाय की पुजा और परसंप्रदाय की निन्दा करता है, वह सत्यतः स्वसंप्रदाय की अधिकाधिक हानी करता है। इसलिये एकसाथ रहना अच्छा है। एक-दुसरेका धर्म (जीवन-तत्व) सुनना और सुनाना (अच्छा है)। देवानंप्रिय (राजा) इच्छा करते है की, सभी संप्रदाय बहुश्रुत (विद्वान) होते रहे, कल्याणगामी होते रहे। उन प्रसन्न (अपने अपने संप्रदाय मे प्रसन्न) जनों को कहे की, देवांनाप्रिय किर्ती तथा सारवृद्धी को (जितना) मानते है (उतना) दान और पुजन को नही। इसी कारण अनेक धर्म-महामात्र, स्त्री-प्रधान-महामात्र, वज्रभुमिक और अन्य (अधिकारी) नियुक्त किये है। इसी का परिणाम है की, स्वसंप्रदाय की वृद्धी और धम्म का प्रकाशन हो रहा है।

गिरनार शिलालेख– १३ मूल ब्राम्हि शिलालेख

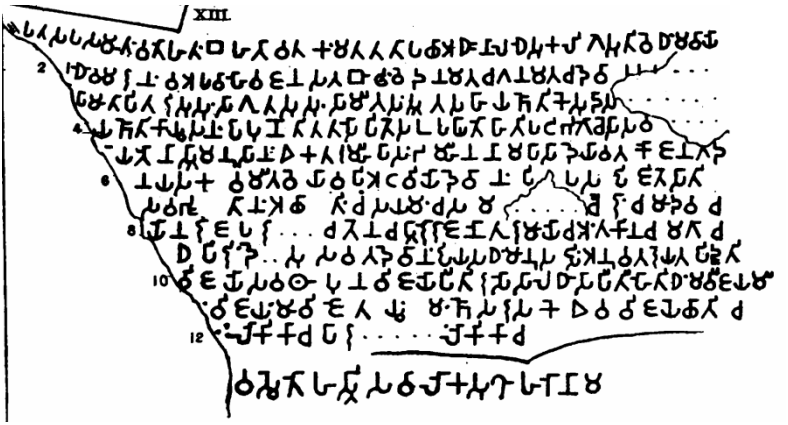

अक्षरानुक्रम से देवनागरी लिप्यांतर

....पतसहसमातंवतोहतंबहतावतकंमततातापछाअधोनलधेसुकलिगेसुतिवेधंमवियो

.....धोवमरनंवअपवाहोवजानसतबाढंवेदनमतचगनमतचदेवा.....

.....पिमातापितरिसुसुंसागुरुसुसंसामितसंसुतसहायञातिकेसुदास.....

.....यञातिकाव्यसनंप्रापुणतिततसोपितेसउपघातोहातिपटिभगोचेसासव.....

.....यतोनास्तामनसानंएकतरम्हीपासंडम्हिननामपासादेयावतकोजनतद

.....नयसकवमितवेयावपिअटवियोदेवानंपि..पसप्रिजितेसाति

.....सवभूतानंअछातिंचंसयमंचसम.....चैरांचमादवच

.....योनराजापर.....चतेनचप्तारोराजानोतुरमायोचअंतकिनचमगोच

.....धपिरिदे..सुसवतदेवानंप्रियसधंमानुसस्टिंअनुवतरयतपिदति

.....विजयोसवथापुनविजयोपीतिरसोसालधासापीहोतिधंमवीजयमी

.....विजयंमाविजेतव्यंमंञासरसकेएवविजयेछातिच

.....लोकिकाचपार.....लकिकाचो

वस्वेतोहस्तिसवालोकसुखाहनोनाम

प्राकृत भाषा के सार्थ वाक्य

....सतसहसमातं वतो हतं बहतावतकं मत तता पछा अधोन लधेसु कलिगेसु. तिवे धंम वियो..... (व)धो व मरनं व अपवाहो व जानस त बाढं वेदनमत च गनमत च. देवा.....पि मातापितरि सुसुंसा गुरु सुसंसा मितसंसु त सहायञातिकेसु दास.....य ञातिका व्यसनं प्रापुणति तत सो पि तेसं उपघातो होति. पटिभगोचे सा सव.....यतो नास्ति मनसानं एकतरम्ही पासंडम्हिन नाम पासादे. यावतको जन तद .....न य सक छमितवे या व पि अटवियो देवानंपि..यस प्रिजिते साति ..... सवभूतानं अछातिं च सयमं च सम.....चैरां च मादव च .....योनराजा पर.....च तेन चप्तारोराजानो तुरमायो च अंतकिन च मगो च ..... (अ)धपिरिदे..सु सवत देवानंप्रियस धंमानुसस्टिं अनुवतर. यत पि दति ..... विजयो सवथा पुन विजयो पीतिरसो सा लधा सा पी होति धंमवीजयमी ..... विजयं मा विजेतव्यं मंञा सरसके एव विजये छाति च .... लोकिका च पार.....लोकिका च.

व स्वेतो हस्ति सवालोक सुखाहनो नाम

हिन्दी अनुवाद

..... उस समय शत-सहस्त्रों को बंदी किया, काट दिया और इससे अनेक मृत हुवे। अब इसके बाद कलिंग मे संक्रमण हो चुका है। तीव्र धम्म .... वध, मृत्यु, देश-निकाला (बंदीवास मे डालना), पीडाजनक तथा निंदनीय है। देवा(नांप्रिय) .... माता-पिताकी सेवा, गुरुजनों की सेवा, मित्र तथा सहकारी, रिश्तेदार, नोकर ..... जिन्होने पहले स्वजनों को (रिश्तेदारों को) दुर्भाग्य परोसा है, त्यांनी उन्हेने (स्वयं की ही) हानी की है और उन्हे भी वैसेही ..... ऐसा एक भी मानव नही जो (किसी) संप्रदाय के साथ प्रसन्न नही। जितने लोग .....स्वकियों को क्षमा करें तथा वनवासींयों को भी। देवानंप्रिय कहते है .... सभी प्राणियोंको संयम, शांत चर्या, दया इच्छिते है। .... यवन राजा और उसके पार चार राजा अंतकिन, तुरमय, मग, ... अध्र, परिन्द और सर्वत्र देवानंप्रिय के धम्मानुशासन का अनुवर्तन हो। जहाँ भी दिया ..... सर्वत्र विजय और फिर से विजय, प्रेमरस से तथा संक्रमण से धम्मविजय होगा। .... जितसे विजय मत मानिये, क्षमा करने मे ही (मै) अपना विजय मानता हुँ। .... इस लोक मे ... परलोक मे।

पूर्ण शुभ्र हाथि (दर्शन) से सभी लोगों को सुख प्राप्त हो।

टिप्पणी - सम्राट अशोक के समय सफेद हाथी बुद्ध का प्रतिक माना जाता था।
यह शिलालेख क्षतिग्रस्त होने के कारण अगले पृष्ठ पर कालसि स्थित १३ वे शिलालेख का ब्राम्हि स्वरूप तथा देवनागरी लिप्यांतर और हिन्दी अनुवाद दिया गया है।

कालसी शिला के पूर्व सतह के शिलालेख तेरहवे लेख का रेखाचित्र

(यह तेरहवाँ शिलालेख शिला के नीचे के हिस्से मे ३५वी पंक्ति मे शुरु होता है)

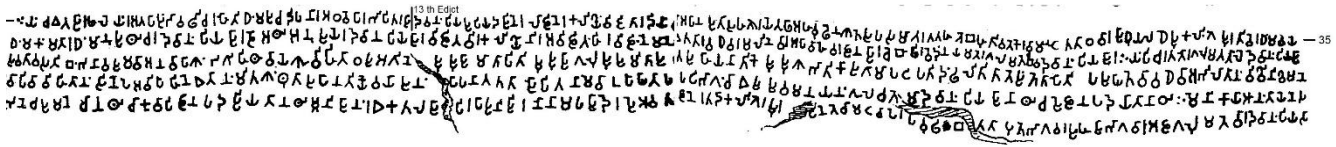

कालसी शिलाले ख १३– देवनागरी लिप्यांतर

देवानंपियसपियदसिनेलाजिनेकलिग्यंविजितादियढीअपानसतासहशेयेतुफाअपवुढेनशतेसहसमाततततहतेबहुतीवतेकेवामिटेततठवासाधुनलधेसुकलिंगेसुतिवेधंमवये
धंमकंमतेधंमानुसथिचदेवानंपियसाजेअथिअनुसयेदेवानंपियसाविजितविकलिग्यानिअविजितंहिविजिंनेमनेएततावधवमलिनेवाअपावेहेवजनसाचेबाढीवेदंनयमतेगलमतेबवदेवानंपियसाइयंपिचततोगलुमततालेदेवानंपियसा
सवतावसतिबंभनावेसमवापाशंडगिहिथावायेशुविहिताठसअगिनेसुसुसामातापितिसुसुसागुलुसुसमिसासतसहायनातिकेसुसुशभातिकासगामापटिपतिदंढलितितातेसंतेतापोतिपसघातेवावधेवाअभिलातानंविखिनिखमने
येसंवापिवाविहितानंसिनेहेअविपाहिनेएतानंमितशंथुतासहानतिक्येवयासनंपापनातततासोपितनामेउपाघातापपटिभागंचाएससवमनयनंगुलमतेमादेवानंपियसानाथिचसेजनपदेयातानाठिइमेनाकायाआनंतायेनेस
बंभनेचसमनेचानथिचाकुवापिजनपदसियतानंथिमूनिसानंएकतलसा..पिपासनिसिनोनामपपादेसेइवताजनेतदाकलिंगेसुपिनातेचामटवेपेपवुढ..बततासतेभागवसहसाभागवाअजगलुमतेवादेवानंपियस

कालसी शिला - तेरहवाँ लेख - प्राकृत शब्द-वाक्य

देवानंपियस पियदसिने लाजिने कलिग्यं विजिता. दियढीअ पानसतासहशे ये तुफा अपवुढेन शतेसहसमात तत हते बहुतीवतेके वा मिटे. तता ठवा साधुन लधेसु कलिंगेसु तिवे धंमवये धंमकंमते धंमानुसथि च देवानंपियसा. जे अथि अनुसये देवानंपियसा विजितवि कलिग्यानि अविजितंहि विजिंनेमने ए तता वध व मलिने वा अपावे हेव जनसा चे बाढी वेदंनयमते गलमते ब व देवानंपियसा. इयं पि च ततो गलुमतताले देवानंपियसा. सवता वसति बंभना वे सम वा पाशंड गिहिथा वा येशु विहिता ठस अगिनेसुसुसा माता-पिति सुसुसा गुलुसुसमिसा सतसहाय नातिके सुसुश भातिकास गामापटिपति दंढलितिता तेसं तेता पोति पसघाते वा वधे वा अभिलातानं वि खि निखमने. येसं वा पि वाविहितानं सिनेहे अविपाहिने एतानं मितशंथुतासहानतिक्ये वयासनं पापनात तता सो पि त नामे उपाघाता पपटिभागं चा एस सवमनयनं गुलमतेमा देवानंपियसा. नाथि च से जनपदेया ताना ठि इमे नाकायाआनंतायेनेस बंभने च समने चा नथि चा कुवा पि जनपदसि यता नथि मूनिसानं एकतलसा पि पासनिसिनो नाम पपादे. से इवता जने तदा कलिंगेसु पि नाते चा मटवे पेपवुढ ..ब तता सतेभाग व सहसाभाग वा अज गलुमते वा देवानंपियस.

टिप्पणी - गिरनार शिलालेख का तेरहवाँ शिलालेख, शहाबाजगढ़ स्थित खारोष्टी लिपी मे लिखे हुवे शिलालेख के देवनागरी रुपांतर और इस कालसी के शिलालेख के देवनागरी रुपांतर इन तिनों की तुलना करने पर इस शिलालेख शृंखला की समानता देखने मिलती है। यह तीन शिलालेख जंबुद्वीप मे (भारता मे) पूर्व दिशामे गिरनार, कालसी उत्तर-मध्य पर और शहाबाजगढ़ उत्तर दिशा मे है। भौगोलीक अंतर के कारण भाषा मे थोडासा फर्क है मगर लिपी (शहाबाजगढ़ - खारोष्टी) बदल गयी है। इस शिलालेख का गिरनार के १३वे शिलालेख से अधिक मेल नही दिखता है, मगर शिला के दक्षिण पृष्ठ पर लिखे लेख के साथ गिरीनार १३ लेख मेल रखता है।

कालसी शिलालेख क्र १३ (पूर्व प्रतल)

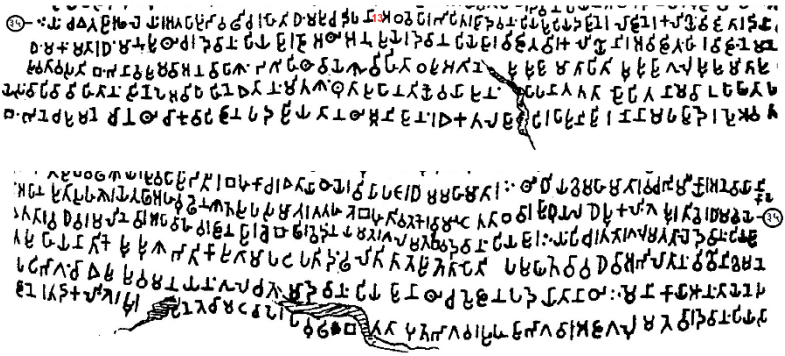

देवनागरी लिप्यांतर

(L1) अठ वसाभिसित सा देवानंपियस पियदसिने लाजिने कलिग्यं विजिता. दियढी
(R1) अ पानसतासहशे ये तुफा अपवुढेन शतेसहसमात तत हते बहुतीवतेके वा मिटे.
(L2) तता ठवा साधुन लधेसु कलिंगेसु तिवे धंमवये धंमकंमते धंमानुसथि च देवानंपियसा. जे अथि अनुसये देवानंपियसा विजितवि कलिग्यानि अविजितंहि विजिनेमने
(R2) ए तता वध व मलिने वा अपावे हेव जनसा चे बाढी वेदंनयमते गलमते ब व देवानंपियसा. इयं पि च ततो गलुमतताले देवानंपियसा.
(L3) सवता वसति बंभना वे सम वा पाशंड गिहिथा वा येशु विहिता ठस अगिनेसुसुसा माता-पिति सुसुसा गुलुसुसमिता स
(R3) तसहाय नातिके सुसुश भातिकास गामापटिपति दंढलितिता तेसं तेता पोति पसघाते वा वधे वा अभिलातानं वि खि निखमने.
(L4) येसं वा पि वाविहितानं सिनेहे अविपाहिने एतानं मितशंथुतासहानतिक्ये वयासनं पापनात तता सो पि त नामे उपाघातापं
(R4) पटिभागं चा एस सवमनयनं गुलमतेमा देवानंपियसा. नाथि च से जनपदे याता नाठि इमे निकाया आनंता येनेस
(L5) बंभने च समने चा नथि चा कुवा पि जनपदसि यता नथि मूनिसानं एकतलसा पि पासनिसिनो नाम पसादे. से अवता
(R5) जने तदा कलिंगेसु पि नाते चा मटवे पेपवुढ ..ब तता सतेभाग व सहसाभाग वा अज गलुमते वा देवानंपियस.

कालसी शिलालेख क्र १३ (उत्तरार्ध),१४ (दक्षिण प्रतल)

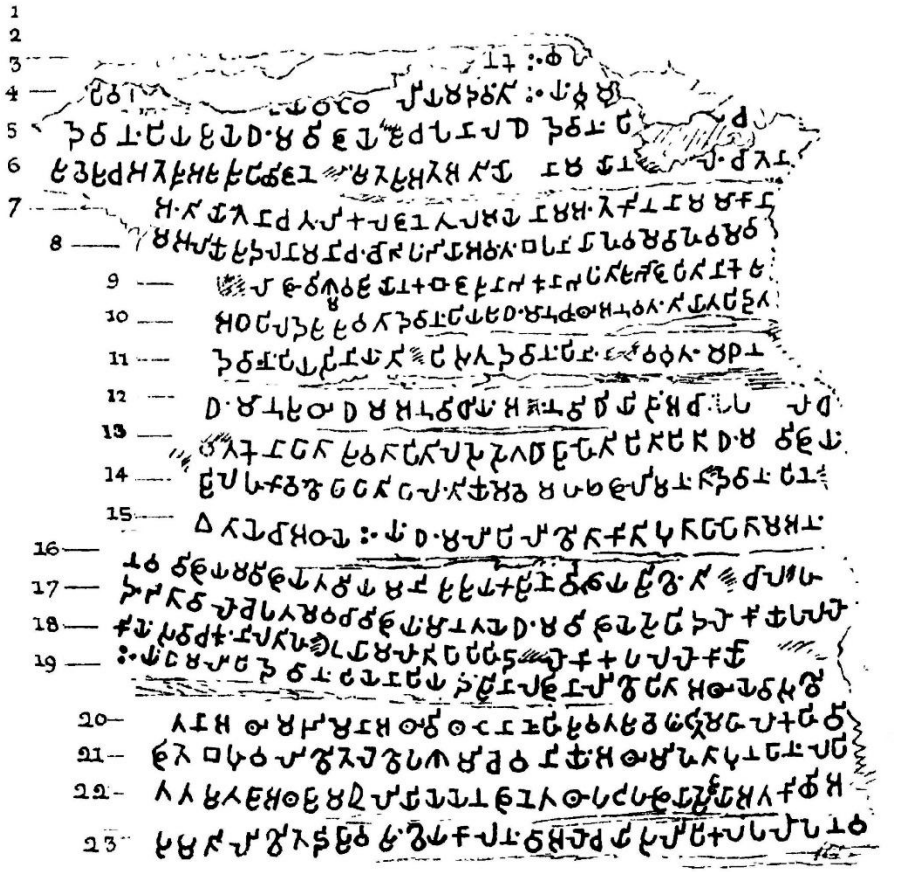

देवनागरी लिप्यांतर

.....
.... नके इछस .....
सवत ..... इयम ..... लिय मदवं ति इयं वू सु .....
देवानंपियेसा ये धंमविजय स च पेना लधे देवानंपि....
सवेस च अतेसु अससु पि छाजने...सतेस अते अंतियोगे नाम योने ..... ल चा तेना
अंतियोगेना च तलि ४ लजाने तुलमये नाम अंतिकेन नाम मका नाम अलिक्यसदले नाम
नीचं चोड पांडिया अवं तंबपंनिया हेवमेवा. हेवमेवा रप ...लाजा विश्मवसि योन
कबाजेसु नेभकु नाभपंतिसं भज पितिनिकेसु अधपुलदेसु सवता देवानपियसा
धंमानुचुथी अनवतंति यात पि दुत
देवानंपियसि नी यंति ते पि सुतु देवानंपिनिय लववुतं माचुनं
धंमानपसथी धंम अनुविधियं अ अनुविधियि सा अचा ये...लाच
एतकेना होति सवत विजये पितिलसे से गधा सा होति पिति होति धंमविजयंसि लहका
वे खो सा पिति पालंतिक्यमेवे महफला मनंति देवानंपिये.
एताये चा अठाये इयं धंमलिपी लिखिता किति पुता पायोता मे अन
नव विजयम विजतविय मनिसु सयकसि नो विजय से खंति चा लंव
दडतेवा लोचे प तमेव चा विजयं मनत ये धंमविजये से हिदलोकिक्य पललोकिये सवा
च कु निलतिहे..उयाम लति पा पि हिदालोकिक पललोकिक्या

हिन्दी अनुवाद (१३ वा लेख संपूर्ण)

अभिषेक के आठ वर्षों बाद देवानंप्रिय प्रियदर्शी राजाने कलिंग जीत लिया। वहाँसे डेढ लाख प्राणी निष्कासीत किये, एक लाख मार दिये और उससे अधिक कई गुना मर गये। अब कलिंग उपलब्धी के बाद देवानंप्रिय के मन मे धम्म-शील, धम्म-आकांक्षा, धम्म-अनुशासन तीव्र हुवा है। कलिंग पर विजय मिलने से देवानंप्रिय पश्चातापित हुवे है। अविजयी पर विजयी होते हुवे वहाँ लोगों के जो वध, मृत्यू और अपहरण होते है, ते देवानंप्रिय को अतिशय वेदनाजनक आणि गंभीर लगते है। परंतु देवानंप्रिय को उससे (अधिक) गंभीर लगता है की, वहाँ जो ब्राम्हण, श्रमण, अन्य संप्रदायी और गृहस्थ लोग रहाते है, जो वृद्धों की सेवा, माता-पिता की सेवा, गुरुजनों की सेवा करते है, मित्र,

परिचित, सहकारी, आप्त, नौकर-चाकर इनसे यथा-योग्य व्यवहार करते है, उनके अपघात, वध होते है, प्रियजनों से वियोग होता है। अथवा जो लोग सुव्यस्थित है परंतु मित्र, परिचित, सहकारी, आप्त दुर्भाग्यग्रस्त होने से जिनके स्नेह की क्षति हुई है, उनको भी आघात होता है। सभी जनों को यह समान (महसुस) होता है। लेकीन देवानंप्रिय को गंभीर लगता है। एक भी संप्रदाय से प्रसन्नता न हो एसा कोई भी नही। इसलिये जितने लोग वहाँ कलिंग मे मारे गये, या मर गये, या अपहृत हुवे, उससे शतांश या सहस्त्रांश भी आज देवानंप्रिय को गंभीर लगता है। (देवानंप्रिय की राय से, जो कोई अपकार करे तो उसे भी क्षमा करना संभव हो तो क्षमा करनी चाहिये। – शहाबाजगढी के लेख अनुसार)

(अगला भाग दक्षिण प्रतल से)

(देवानंप्रिय सभी प्राणिमात्रों का कल्याण, संयम, निःपक्षपात की इच्छा करते है। - क्षतिग्रस्त अक्षरों के लिये शहाबाजगढी के लेख अनुसार)
देवानंप्रिय की राय से यही महान विजय है। यह देवानंप्रिय ने प्राप्त किया है, यहाँ और सभी पडोसी राज्य मे भी। छह सौ योजन तक जहाँ अंतियोग नाम का यवनराजा और अंतियोग के परे ४ राजे तुरमय नाम का, अंतिकेन नाम का, मग नाम का, अलिक्यसदल नाम का और निचे चोड, पांडिय, तंबपनी। इसी प्रकार इस राज्य के राजे यवन, कंबोज, नाभक, नाभपंति, भोज व पितानिक, आंध्र व पुलिंद सर्वत्र धम्म अनुशासन का पालन हो रहा है। जहाँ देवानंपिय के दूत पहुँचे नही वहाँ भी देवानंपिय के वचन, विधान और धंमअनुशीलन सुनकर प्रजाजन वैसा आचरण करते है। इस प्रकार सर्वत्र विजय हुवा है। प्रीतीरस से विजय मिला है। प्रीती धम्मविजय से मिलती है। लेकीन यह छोटासा (यश) है। देवनंपिय केवल परमार्थ को ही महान विजय मानते है। इसिलिये यह नीतीलेख लिखवाया है। किसलिये ? की मेरे पुत्र, पौत्र यह सभी ऐसे (सशस्त्र) विजय को न माने मगर यह नवीन विजय को ही मानते रहे। वे क्षमा और लघु दंड मे ही स्वारस्य मानते रहे। इसी मे विजय मानते रहे जो धम्मविजय है। इसी मे इहलौकीक और पारलौकिक है। यह परम आनंद दायक है, इहलोक मे और परलोक मे।

गिरनार शिलालेख– १४ मूल ब्राम्हि शिलालेख

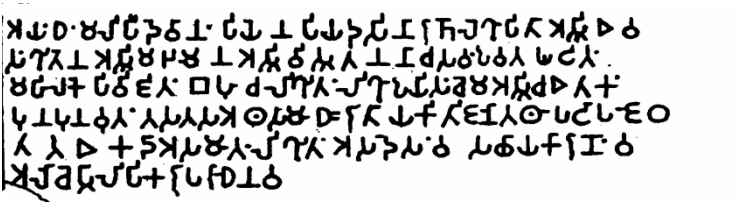

अक्षरानुक्रम से देवनागरी लिप्यांतर

अयंधंमलिपीदेवानंपियेनपियदसिनाराञालेखापिताअस्तिएव
संखितेनअस्तिमझमेनअस्तिविस्ततननाचसवंप्रवतघटितं
महिलकेपिविजितंबहुचलिखीतंलिखीप्रयिसंचेमअस्तिचएतकं
पुनपुनवुतंतसतसअथसमाधारातायकितिजनोतथापटिपजेठ
ततएकदाअसमातंलिखितंअसदेसंवसछायकारणंव
अलोचेत्पालिपिकरापराधेनव

प्राकृत भाषा के सार्थ वाक्य

अयं धंमलिपी देवानंपियेन पियदसिना राञा लेखापिता. अस्ति एव संखितेन अस्ति मझमेन अस्ति विस्ततन. ना च सवं सर्वत घटितं. महिलके हि विजितं बहु च लिखीतं लिखीप्रयिसं चेव. अस्ति च एत कं पुन पुन वुतं तस तस अथस माधुरताय किंति जनो तथा पटिपजेठ. तत एकदा असमातं लिखितं अस देसं व सछाय कारणं व अलोचेत्पा लिपिकरापराधेन व.

हिन्दी अनुवाद

यह नीतीलेख देवानंप्रिय प्रियदर्शी राजा ने लिखवाया है। यह संक्षेप मे है, मध्यम है, विस्तृत है। सब कुछ सभी जगहों पर मेल न खाता होगा। (मैने बहुत) विशाल जित लिया है, बहुत लिखा है, (अभी और भी) लिखना है। जहाँ जैसे मधुर (अच्छा) हो, तो बार बार (लिखा) है इसलिये की लोग वैसा ही प्रतिपादन करें। कोई (जगह) लिखावट मे समतोल नही इसलिये की वह देश (वह प्रदेश – स्थान) क्षतीग्रस्त होगा, अथवा किसी के (गलत) कहने (सुनने) या लेखनिक के अपराध से (हो गया होगा)।

सम्राट अशोक के शिलालेखों व स्तंभालेखों के भौगोलिक स्थान

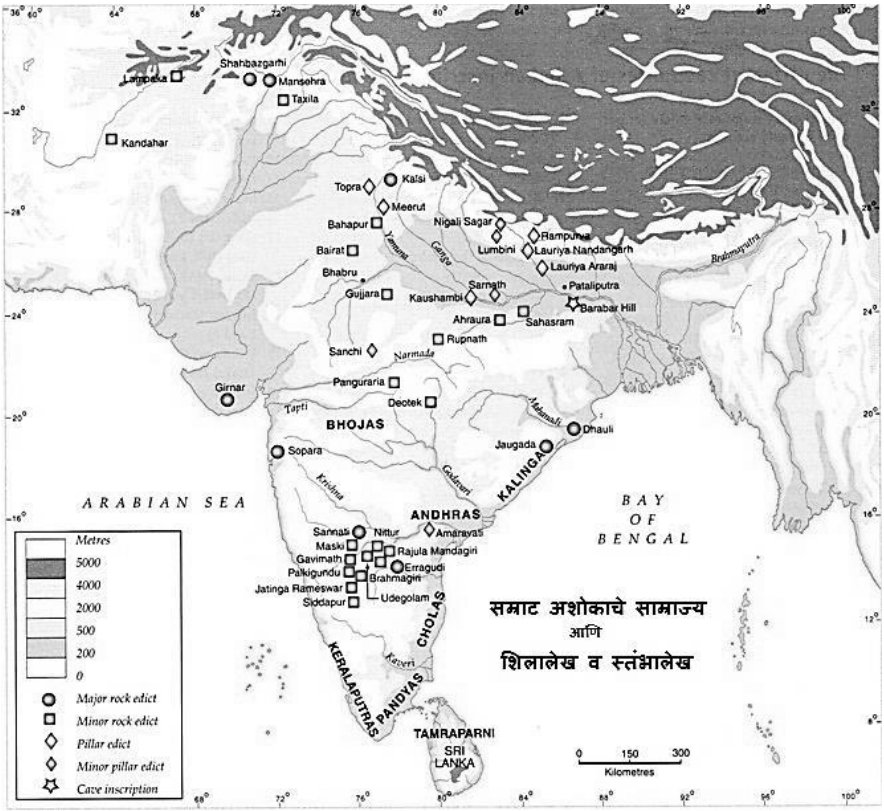

इस मानचित्र मे दिखाये गये स्थानपर आज शिलालेख-स्तंभालेख उपलब्ध है ही ऐसा नही, कारण अनेक जगह के स्तंभ अथवा शिला स्थानांतरीत की गयी है, जैसे टोपरा स्थित स्तंभ फिरोज शाह कोटला, दिल्ली में, मिरत स्थित स्तंभ बडा हिन्दुराव असपताल के सामने, दिल्ली में, और कौशांबी स्थित स्तंभ अलाहाबाद किले में मुगल काल में स्थानांतरीत किये गये है। सोपारा स्थित शिला मुंबई पुराण-वस्तु संग्रहालय में और देवटेक स्थित शिला नागपुर पुराण-वस्तु संग्रहालय में स्थानांतरीत की गयी है। बैराट, जयपूर स्थित शिला कोलकाता ASI कार्यालय में स्थानांतरीत की गयी है।

सम्राट अशोक के शिलालेख व स्तंभलेखों के भौगोलिक स्थान तथा प्राप्ति वर्ष

	जगह, राज्य	लेख का प्रकार	अक्षांश	रेखांश	प्राप्ति वर्ष
1	कालसी, उत्तराखंड	बृहद् शिलालेख 1 से 14	30°31'04.7"N	77°50'53.5"E	1860
2	बडा हिंदूराव, देहली (मेरठ)	स्तंभलेख 1 से 6	28°40'25.9"N	77°12'42.5"E	1837
3	फिरोजशा कोटला,देहली (टोपरा)	स्तंभलेख 1 से 7	28°38'08.6"N	77°14'43.4"E	1837
4	बहापूर, देहली	लघु- शिलालेख	28°33'30.8"N	77°15'23.8"E	1966
5	निगलीहवा, नेपाल	लघु- स्तंभलेख	27°35’44.6N	83°5'44"E	1895
6	लुंबिनी, नेपाल	लघु- स्तंभलेख	27°28'10.8"N	83°16'32.1"E	1896
7	रामपूर्वा, बिहार	स्तंभलेख 1 से 6	27°16'11"N	84°29'58"E	1902
8	लौरिया नंदनगढ, बिहार	स्तंभलेख 1 से 6	26°59'54"N	84°24'30"E	1834
9	लौरिया अरेराज, बिहार	स्तंभलेख 1 से 6	26°33'00"N	84°38'51"E	1834
10	गुजर्रा, मध्य प्रदेश	लघु- शिलालेख 1	25°34'37.4"N	78°32'45.4"E	1953
11	अलाहाबाद, उत्तर प्रदेश	स्तंभलेख 1 से 6, रानी लेख	25°25'52.9"N	81°52'29.8"E	1834
12	सारनाथ, उत्तर प्रदेश	लघु- स्तंभलेख	25°22'53.2"N	83°01'21.6"E	1904
13	रतनपूर्वा, बिहार	लघु- शिलालेख 1	25°00'57.4"N	83°20'22.53"E	2009
14	अहरौरा, उत्तर प्रदेश	लघु- शिलालेख 1	25°00'53"N	83°00'58"E	1961
15	बाराबार गुहा, उत्तर प्रदेश	गुहा लेख	25°00’20"N	85°03'53"E	1847
16	सहस्राम, बिहार	लघु- शिलालेख 1	24°56'31"N	84°02'19"E	1839
17	रुपनाथ, मध्य प्रदेश	लघु- शिलालेख 1	23°38'26.5"N	80°01'55.7"E	1871
18	सांची, मध्य प्रदेश	लघु- स्तंभलेख	23°28'44.6"N	77°44'22.7"E	1863
19	सारु-मारु, मध्य प्रदेश	लघु- शिलालेख	22°43'56.0"N	77°31'15.5"E	1975
20	गिरनार, गुजराथ	बृहद् शिलालेख 1 से 14	21°31'33.5"N	70°28'59.4"E	1822
21	धौलि, ओडिशा	बृहद् शिलालेख, 2 स्वतंत्र	20°11'22.7"N	85°50'32.7"E	1837
22	जौगड, ओडिशा	बृहद् शिलालेख, 2 स्वतंत्र	19°31'21.4"N	84°49'51.1"E	1850
23	सोपारा, महाराष्ट्र	बृहद् शिलालेख, 8 - 9	19°24'51.1"N	72°47'43.0"E	1882
24	सन्नती, आन्ध्र प्रदेश	बृहद् शिलालेख	16°50'08.5"N	76°55'58" E	1989
25	मास्कि, कर्नाटक	लघु- शिलालेख 1 - 2	15°57'26.5"N	76°38'28"E	1915
26	नित्तूर, कर्नाटक	लघु- शिलालेख 1 - 2	15°32'49.7"N	76°49'58"E	1977
27	उदेगोलम, कर्नाटक	लघु- शिलालेख 1 - 2	15°31'12.0"N	76°50'01"E	1978
28	रजुला मंदागिरी, आन्ध्र प्रदेश	लघु- शिलालेख 1 - 2	15°26'6.4"N	77°28'17.5"E	1953
29	पालकीगुंडु, कर्नाटक	लघु- शिलालेख 1	15°20'38"N	76°08'14.5"E	1931
30	गविमठ, कर्नाटक	लघु- शिलालेख 1	15°20'14"N	76°9'43"E	1931
31	येरागुडी, कर्नाटक	बृहद् - लघु- शिलालेख	15°12'35.8"N	77°34'35.8"E	1928
32	जतिंग रामेश्वर, कर्नाटक	लघु- शिलालेख	14°50'59"N	76°47'27"E	1892
33	ब्रम्हगिरी, कर्नाटक	लघु- शिलालेख 1 - 2	14°48'49"N	76°48'23"E	1892
34	सिद्दपूर, कर्नाटक	लघु- शिलालेख 1	14°48'49"N	76°47'59"E	1892
35	बैराट, (राजस्थान) कोलकाता	लघु- शिलालेख (स्वतंत्र)	22°33'20"N	88°21'1.9"E	1840
36	कंदाहर, अफगाणीस्थान	लघु- शिलालेख - द्वीभाषी	31°36'56.3"N	65°39'50.5"E	1963
37	कंदाहर, अफगाणीस्थान	(शायद) बृहद् शिलालेख- ग्रीक	31°36'09"N	65°39'32"E	1963
38	शाहबाजगढी, पाकिस्तान	बृहद् शिलालेख	34°14'8"N	72° 9'36"E	1836
39	मानसेहरा, पाकिस्तान	बृहद् शिलालेख	34°20'0"N	73°10'0"E	1888

सम्राट अशोक की समय निश्चिती

अलेक्झांडर से सम्राट अशेक तक का कालावधी (इ.स.पूर्व)		पाँच समकालीन राजाओं का सामायिक कालावधी (इ.स.पूर्व)	
अलेक्झांडर भारत से लौट जाना	३२३	टोलेमी (दूसरा)	२८६ से २४६
चंद्रगुप्त मौर्य का शासन	३२२ से २९८	अँटीगोनस (दूसरा)	२७७ से २३९ (दो बार राजा)
बिंदूसार मौर्य का शासन	२९८ से २७२	मगास	२७६ से २५०
सम्राट अशोक का राज्यारोहण	२७२	अलेक्झांडर (दूसरा)	२७२ से २५५
सम्राट अशोक का अभिषेक	२६९	अँटीयोकस (दूसरा)	२६२ से २४६

सम्राट अशोक का काल	सम्राट अशोक के जीवन संदर्भ	इसवी सन पूर्व वर्ष	पाँच समकालीन रजाओं का सामायिक अवधी	गौतम बुद्ध के पश्चात कालगणन
राजकुमार अशोक		२७५		२४१
		२७४		२४२
		२७३		२४३
अभिषेक पूर्व राजा अशोक	राज्यारोहण	२७२		२४४
		२७१		२४५
		२७०		२४६
१	राज्याभिषेक	२६९		२४७
२		२६८		२४८
३		२६७		२४९
४		२६६		२५०
५		२६५		२५१
६	उपासक	२६४		२५२
७	उपासक	२६३		२५३
८	कलिंग युद्ध	२६२	पाँच समकालीन राजाओं का सामायिक कालावधी	२५४
९	संघ के समीप, लघु-शिलालेख	२६१		२५५
१०	लेखन और संबोधी यात्रा	२६०		२५६ @
११	कंदाहर शिलालेख	२५९		२५७
१२	बृहद शिलालेख का लेखन	२५८		२५८
१३		२५७		२५९
१४		२५६		२६०
१५		२५५		२६२
१६		२५४		२६३
१७		२५३		२६४
१८		२५२		२६५
१९		२५१		२६६
२०	लुंबिनी, कोनागमन स्तुप यात्रा	२५०		२६७

@ - तथागत गौतम बुद्ध के महापरिनिर्वाण का २५६ वा वर्ष
तथागत बुद्ध का महापरिनिर्वाण इसा पूर्व ५१६ या ५१७ में होनेका अनुमान निश्चित है।

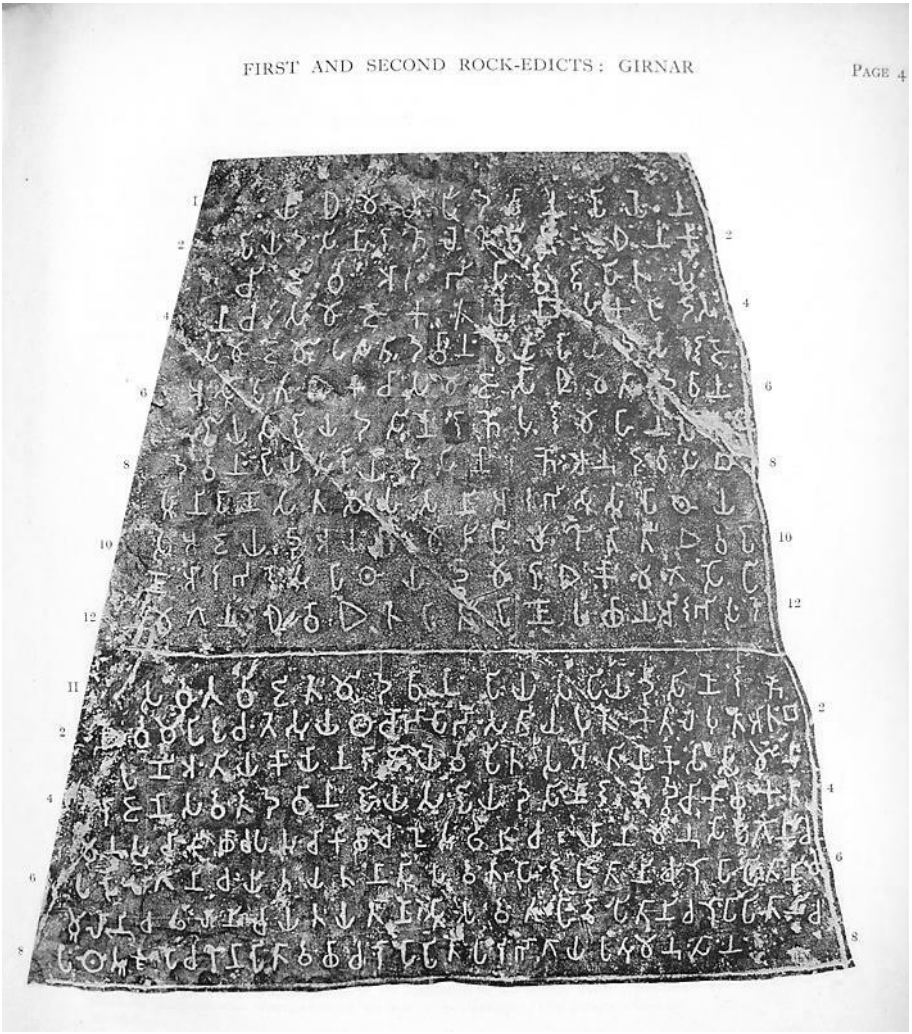

गिरनार स्थित शिलालेख का छाप - शिलालेख १ और २

गिरनार स्थित शिलालेख का छाप - शिलालेख ३, ४ और ५

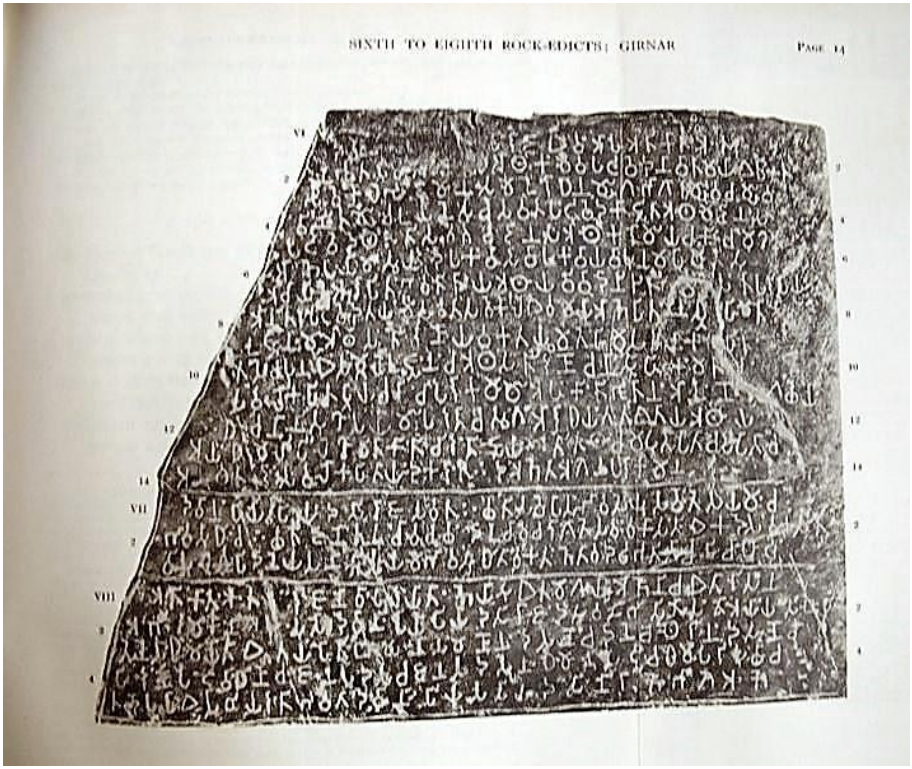

गिरनार स्थित शिलालेख का छाप - शिलालेख ६, ७ और ८

गिरनार स्थित शिलालेख का छाप - शिलालेख ९, १०, ११ और १२

शिलालेख १२ में स्वसंप्रदाय वृद्धी तथा परसंप्रदाय सन्मान (सहिष्णुता) का उत्कृष्ट विवेचन किया गया है। सम्राट अशोक का यह विवेचन एक सार्वकालिक सत्य है, इसकी कोई नय राय नही हो सकती। यह विवेचन करते हुए गिरनार शिलालेख में स्वसंप्रदाय इस अर्थ का जो शब्द अंकित किया है, वह ब्राम्हि लिपी में "आ प्त पा सं ड " इस तरह (सात बार) है। फिरभी अलेक्झँडर कनिंगहॅम, इ. हुल्त्झ, डॉ. राजबली पांडे तथा आत्याधुनिक डॉ. मिना तालिम इन सभी नें लिप्यांतर करते हुए यह शब्द "आ त्प पा सं ड" ऐसा लिखा है। इस के लिये इन सभी नें "आत्म" मतलब "स्व" इस संस्कृत शब्द को आधार मान लिया है। इसी कारण इसका लिप्यांतर आत्पपासंड ऐसे करते हुए "प्त" यह संयुक्ताक्षर अशोक के लेखनिक की गलती होगी ऐसा अनुमान किया है। प्रत्यक्ष में यह शिलालेख संस्कृत में न होकर प्राकृत में लिखे है, यह बात भुलना गलत होगा। इस कारण यह शब्द "आप्त" अर्थात "स्वकिय" इसी अर्थ से आप्तपासंड यही सही है, यह मेरा मानना है। "आ प्त पा सं ड" ऐसा लिखने में अशोक के लेखनिक कोई गलती नही कर रहे थे। आकलन करने वालों के आकलन में गलती हुई है। मराठी तथा हिंदी भाषा में "आप्त" मतलब "स्वकिय" यह शब्द महाराष्ट्री प्राकृत से आया है, "आत्म" मतलब "स्व" इस संस्कृत शब्द से नही। कालसी और शहाबाजगढी स्थित लेखों में यह शब्द अतपासंड अथवा अतपाषंड इस तरह है, और यह शब्द पालि भाषा के अनुरुप है, संस्कृत से नही।

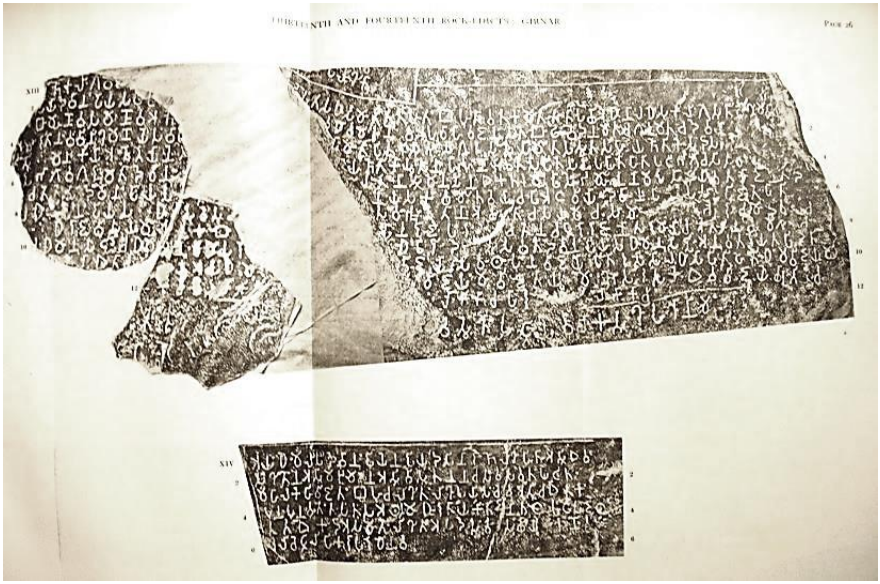

गिरनार स्थित शिलालेख का छाप - शिलालेख १३ और १४

गिरनार शिलालेख पर बनी संरक्षण इमारत के द्वार के पास मैं हर्षदा के साथ